दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 354 | ग्वालियर,बुधवार 04, सितंबर 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

कलेक्टर महोदय के आदेश पर हुआ अमल,लहार नगरपालिका ने गायों को दिया आश्रय

जिला कलेक्टर महोदय के प्रयास से रोड पर विचरण करने वाले निराश्रित गौवंशो की व्यवस्था हेतू जारी आदेश के तहत् पुरे जिले में गायों की व्यवस्था प्रशासनिक स्तर पर किये जाने का कार्य चल रहा है उसी क्रम में लहार नगरपालिका द्वारा भी लहार के खाली पड़े नये वस स्टेंड में गायों को आश्रय देकर उनके चारे पानी की व्यवस्था करवाई जा रही है मां गायत्री गौरक्षा संगठन संस्थापक संतोष चौहान ने आम जन से अपील करते हुए कहा कि लहार विधायक और नगर के गौभक्त नागरिकों को भी नगरपालिका के इस गौ सेवा के सराहनीय प्रयास में यथा संभव सहयोग करना चाहिए जिससे यह वैकल्पिक, व्यवस्था,विधीवत गौशालाएं चालू होने तक सुचारू रूप से चलती रहे

स्वस्थ जीवन की ओर एक कदम पोषण आहार जागरूकता अभियान

अंबाह पीजी कॉलेज की रासेयो इकाइयों द्वारा पोषण आहार सप्ताह के अंतर्गत अंबाह तहसील के वार्ड क्रमांक 13 में पोषण आहार जागरूकता रैली तथा जनसंपर्क कर आंगनवाड़ी में महिलाओं व बच्चों में पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इसका प्रमुख उद्देश्य सामुदायिक स्तर पर महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य का आकलन करना एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है । यह कार्यक्रम रासेयो जिला संगठक डॉ. शशि वल्लभ शर्मा एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.विश्वास मेढेकर के निर्देशन में आयोजित किया गया। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती रामा श्रीवास्तव ने स्वयंसेवकों को महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य के लिए आंगनवाड़ी में चलने वाली योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। स्वयंसेविका मुस्कान ,साहिल डंडौतिया, कुसुम यादव, शिव शक्ति ,शिवानी ने जनसंपर्क कर सभी को पोषण युक्त आहार के विषय में बताया, कि गर्भवती महिलाओं व बच्चों के लिए अंकुरित अनाज, दूध ,सब्जी एवं मौसम के अनुरूप फल सहित पोषक तत्वों से युक्त आहार लेना चाहिए । कार्यक्रम अधिकारी डॉ.रक्षा कम्तान ने कहा कि पौष्टिक आहार से शरीर स्वस्थ रहता है और बीमारियों से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा महिलाओं एवं बच्चों को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। डॉ पूर्णिमा अग्रवाल ने कहा, कि पोषित आहार के साथ-साथ अपने आसपास के वातावरण व स्वयं को स्वच्छ रखने का प्रयास करें। कार्यक्रम में आंगनवाड़ी सहायिका श्रीमती रितु वर्मा ,स्वयंसेवक याशिका, वर्षा, राधा, प्रभाकर ,अरुण, अजय, नेहा ,खुशबू, अंजलि, खुशी, अलका ,केशबिनआदि ने सक्रिय भागीदारी की।

गौरक्षा संगठन का गौ सेवा कार्य निरंतर जारी

लहार नगर में गौरक्षक जमीनी स्तर पर निरंतर सेवा कार्य में जुटे

हुए हैं इसी क्रम में घायल गायों की सुचना मिलने पर मां गायत्री गौरक्षा संगठन के लहार नगर प्रभारी शिबू भदौरिया के मार्गदर्शन में डेनिडा रोड पुलिया के पास दो घायल गायो का गौसेवकों ने किया प्राथमिक उपचार शीलू प्रजापति,पवन राठौर,बेटू श्रीवास्तव,छोटू परमार, एवं बाबा का रहा सराहनीय योगदान

35 देशों के मंत्रिगण ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर भ्रमण पर आयेंगे ,

केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री श्री सिंधिया की पहल पर आ रहा है यह प्रतिनिधि मंडल

ग्वालियर दुर्ग पर लाइट एण्ड साउण्ड शो देखने पहुँचेंगे विभिन्न देशों के मंत्रिगण ,कलेक्टर एवं एसपी ने भारत सरकार के अधिकारियों के साथ तैयारियों को लेकर बैठक की

नईदिल्ली। में आयोजित होने जा रही विश्व दूरसंचार मानकीकरण असेम्बली (डब्ल्यूटीएसए) में भाग लेने आ रहे विभिन्न देशों के दूरसंचार मंत्रियों सहित 35 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर के भ्रमण पर भी आयेगा। इस दौरान विभिन्न राष्ट्रों के मंत्रिगण यूनेस्को द्वारा घोषित म्यूजिक सिटी ऐतिहासिक ग्वालियर दुर्ग पर लाइट एण्ड साउण्ड शो देखने पहुँचेंगे। साथ ही ऊषा किरण पैलेस में दूरसंचार के क्षेत्र में मेड इन इंडिया की थीम पर प्रजेंटेशन भी देखेंगे। विभिन्न देशों के मंत्रिगणों का यह प्रतिनिधि मंडल ग्वालियर प्रवास के दौरान केन्द्रीय दूरसंचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मेजबानी में जयविलास पैलेस में आयोजित डिनर में भी शामिल होगा।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने मंगलवार को विभिन्न देशों के मंत्रियों के प्रतिनिधि मंडल के ग्वालियर प्रवास की व्यवस्थाओं को लेकर वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक ली। बैठक में भारत सरकार के कम्युनिकेशन मंत्रालय के निदेशक श्री अतीक अहमद, प्रभारी पुलिस अधीक्षक श्री राकेश सगर, अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार व श्री टी एन सिंह, अपर आयुक्त नगर निगम श्री मुनीष सिकरवार

तथा भारत सरकार के दूरसंचार मंत्रालय के अन्य अधिकारी एवं आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अधिकारियों सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे। बैठक में कलेक्टर श्रीमती चौहान ने नगर निगम सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभिन्न राष्ट्रों से आ रहे मंत्रिगणों के प्रतिनिधि मंडल के प्रवास के दौरान साफ-सफाई, स?क मार्ग व बिजली सहित सभी व्यवस्थायें सुदृ? रहें। साथ ही शहर की यातायात व्यवस्था भी सुव्यवस्थित बनी रहे, इसके लिए पुख्ता कार्ययोजना बनाकर उस पर अमल करें। प्रभारी पुलिस अधीक्षक श्री सगर ने कहा कि विदेशी मंत्रियों के प्रतिनिधि मंडल के आगमन के दौरान ग्वालियर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जायेंगे। भारत सरकार के कम्युनिकेशन डिपार्टमेंट के निदेशक श्री अतीक अहमद ने जानकारी दी कि इंटरनेशनल टेली कम्युनिकेशन यूनियन द्वारा हर चार साल के अंतराल से अलग-अलग देशों में विश्व दूरसंचार मानकीकरण असेम्बली का आयोजन किया जाता है। इसी क?ी में भारत की राजधानी नईदिल्ली में 15 से 18 अक्टूबर तक विश्व दूर संचार मानकीकरण असेम्बली आयोजित होने जा रही है। इससे पहले 13 अक्टूबर को असेम्बली में भाग लेने आ रहे विभिन्न देशों के 35 मंत्रिगण एवं अन्य ऑफिसियल ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर का भ्रमण करने आयेंगे। यह प्रतिनिधि मंडल विशेष चार्टर्ड विमान से 13 अक्टूबर को दोपहर लगभग 12 बजे ग्वालियर पहुँचेगा। ग्वालियर प्रवास के दौरान होटल ताज ऊषा किरण में दो प्रजेंटेशन देखेगा। साथ ही ग्वालियर दुर्ग पर लाइट एण्ड साउण्ड प्रोग्राम देखने भी जायेगा। सायंकाल जयविलास पैलेस में डिनर में शामिल होने के बाद रात्रि लगभग 9 बजे चार्टर्ड विमान द्वारा वापस नईदिल्ली के लिये रवाना होगा। श्री अतीक अहमद ने बताया कि दूरसंचार मानकीकरण क्षेत्र की रणनीतिक दिशा को परिष्कृत करने के उद्देश्य से इंटरनेशनल टेली कम्युनिकेशन यूनियन द्वारा विश्व दूरसंचार मानकीकरण असेम्बली का आयोजन किया जाता है। नईदिल्ली में आयोजित होने जा रही असेम्बली में 193 सदस्य देशों, वैश्विक मानकीकरण निकायों और दुनियाभर के दूरसंचार / आईसीटी उद्योग के लगभग 2 हजार प्रतिनिधियों के भाग लेने की संभावना है।

संबल योजना में लाभ देने के निर्देश, पेंशन का लाभ मिला कलेक्टर की अध्यक्षता में जनसुनवाई आयोजित

श्योपुर।कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड ने जनसुनवाई के दौरान दो हितग्राहियों को संबल योजना में लाभ देने के निर्देश दिये, इसके साथ ही अन्य दो हितग्राहियों को अवगत कराया गया कि मुख्यमंत्री जन कल्याण संबल योजना में उनके प्रकरण स्वीकृत हैं तथा शीघ्र ही बैंक खातों में सहायता राशि प्राप्त होगी। जन सुनवाई के दौरान विधवा महिला श्रीमति पंसूरी बाई की सामाजिक सुरक्षा पेंशन भी मौके पर स्वीकृत करने की कार्रवाई की गई।कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई के दौरान अपर कलेक्टर श्री डॉ. अनुज कुमार रोहतगी, एसडीएम श्री मनोज गढवाल, डिप्टी कलेक्टर श्री वायएस तोमर एवं श्री बी.एस. श्रीवास्तव सहित विभिन्न विभागो के अधिकारी मौजूद रहें। जनसुनवाई के दौरान 168 आवेदन प्राप्त हुए।

मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना में मिलेगा लाभ-कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड द्वारा जनसुनवाई के दौरान श्रीमती सुमेशी आदिवासी निवासी दांतरदा खुर्द पत्नि स्व. श्री रघुवीर आदिवासी को अवगत कराया गया कि संबल योजना के तहत राशि स्वीकृत होकर एफपीओ जारी हो चुका है। इसी प्रकार श्रीमती राजी बाई पत्नि स्व. श्री दारा सिंह निवासी गुरनावदा को भी उनके द्वारा संबल योजना के तहत लाभ दिये जाने संबंधी आवेदन के परीक्षण उपरांत जानकारी दी गई कि प्रकरण स्वीकृत है तथा एफपीओ जारी हो चुका है, राज्य स्तर से ऑनलाइन राशि का भुगतान बैंक खाते में शीघ्र ही होगा। कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड ने श्रीमती अंगुरी बाई आदिवासी निवासी वार्ड 12 श्योपुर तथा श्रीमती सोनी आदिवासी निवासी वार्ड 12 मंडी का सहराना श्योपुर के आवेदन पर संबल योजना के तहत लाभ दिये जाने के निर्देश सीएमओ श्री सतीश मटसेनिया को दिये गये।

बीपीएल सूची में नाम शामिल करने के निर्देश-कलेक्टर श्री लोकेश कुमार जांगिड द्वारा जनसुनवाई के दौरान वार्ड 11 श्योपुर निवासी श्री रामप्रकाश गुप्ता का नाम बीपीएल सूची में दर्ज किये जाने के निर्देश एसडीएम श्री मनोज गढवाल को दिये गये, साथ ही आयुष्मान कार्ड बनाये जाने के निर्देश स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को दिये गये।

जंतर मंतर में प्रेरणा हिंदी सभा का राष्ट्रभाषा बनाने हेतु ऐतिहासिक सभा

प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा का राष्ट्रीय सम्मेलन 14 सितंबर को दिल्ली में आयोजित

अम्बाह। मुरैना। जबलपुर प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के संस्थापक कवि संगम त्रिपाठी ने दिनांक 30 अगस्त 2024 को जारी विज्ञप्ति में बताया कि आजादी के बाद जंतर मंतर में ऐतिहासिक सभा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु आयोजित किया जा रहा है। कवि संगम त्रिपाठी ने कहा कि हम सभी भाषाओं का सम्मान समान रूप से करते हैं और सभी भाषाएं हमें ज्ञान प्रदान करती है पर देश की राष्ट्रभाषा भी होनी चाहिए उसी कामना की पूर्ति हेतु देशभर से हिंदी सेवी 14 सितंबर 2024 को दिल्ली में प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के आयोजन में शामिल हो रहे हैं। प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के जंतर मंतर में सभा व प्रदर्शन और राष्ट्रीय सम्मेलन में सहभागिता कर रहे हैं मुख्य रूप से कवि कवयित्री साहित्यकार शिक्षाविद समाजसेवी पत्रकार व आमजन जो कार्यक्रम में उपस्थित हो रहे है उनमें भैरु सुनार मनासा मध्यप्रदेश,ओमप्रकाश द्विवेदी देवरिया उत्तर प्रदेश, राजकुमारी रैकवार जबलपुर मध्यप्रदेश, गिरिधर प्रसाद सिंह कोडरमा झारखण्ड, सुधीर सिंह दिल्ली, डॉ राजेश कुमार शर्मा कानपुर, सुषमा वीरेन्द्र खरे सिहोरा रोड, हेमंत जगदीश शर्मा नोएडा, अंशुल दीवान धौलपुर राजस्थान, सदाशिव बेगाना दिल्ली, स्वाति शर्मा नोएडा, उमाकांत त्रिपाठी निश्छल रीवा मध्यप्रदेश, शिवानंद चौबे जौनपुर उत्तर प्रदेश, डॉ प्रेम शंकर द्विवेदी भास्कर जौनपुर उत्तर प्रदेश, मोहम्मद मुमताज हसन गया बिहार, अंजु अग्रवाल उत्साही दिल्ली, कवि मॉगी लाल मरमिट श्योपुर मध्यप्रदेश, ब्रम्हानंद तिवारी पुष्पधनवा दिल्ली, बसंत ऋतुराज अभनपुर छत्तीसगढ़, कवयित्री अन्नपूर्णा मालवीया (सुभाषिनी) प्रयागराज उत्तर प्रदेश, राम गोपाल फरक्या मंदसौर मध्यप्रदेश, कवि दिनेश सिंह सेंगर अम्बाह मुरैना मध्यप्रदेश, डॉ ऋतु अग्रवाल मेरठ उत्तर प्रदेश, डॉ संजीदा खानम शाहीन, जोधपुर राजस्थान, आशीष अम्बर दरभंगा बिहार, प्रभा बच्चन श्रीवास्तव जबलपुर, एस.एस.श्रीवास्तव जबलपुर, तरुणा खरे जबलपुर मध्यप्रदेश, प्रोफेसर

मिथिलेश कुमार त्रिपाठी जौनपुर उत्तर प्रदेश, इंजिनियर एन सी खंडेलवाल फरीदाबाद हरियाणा, डॉ महिमा दुबे खरगोन म.प्र., सुनीता वर्मा सन्ध्या बांदीकुई जिला दौसा, पवन कुमार सिंह सोनभद्र, हेमा श्रीवास्तव प्रयागराज उत्तर प्रदेश, श्रीमती ओमेश्वरी साहू अभनपुर, बिनोद कुमार पांडेय नोएडा, कवि गोपाल जाटव विद्रोही मन्दसौर मध्यप्रदेश, रामबहाल सिंह बहाल कवि हुकुलगंज वाराणसी, डॉ मीना कुमारी परिहार मान्या बिहार, संतोष कुमार पाठक गढ़वा झारखण्ड, मनोज यादव कवि गाजियाबाद, के. एल. सोनी विनोदी महाराजपुर छतरपुर मध्यप्रदेश, प्रणय श्रीवास्तव अश्क वारासिवनी बालाघाट म.प्र., कुंवर प्रताप सिंह प्रतापगढ़ राजस्थान, डॉ रमेश कटारिया पारस ग्वालियर मध्यप्रदेश, प्रदीप कुमार सिंह हापुड़, ई. अरुण अग्रवाल गाजियाबाद, किम्मी रहेजा दिल्ली, संतोष कुमार महतो असम, सुरेन्द्र कुमार सिंह चांस मऊ उत्तर प्रदेश, कविता मिस्त्रा लखनऊ उत्तर प्रदेश, मानव सिंह राणा सुओम अलीगढ़ उत्तर प्रदेश, गोवर्धन थपलियाल दिल्ली, डॉ अर्जुन गुप्ता गुंजन प्रयागराज उत्तर प्रदेश, कवयित्री ज्योति दिनकर ग्वालियर मध्यप्रदेश, पुष्पा शर्मा दिल्ली, राजेश तिवारी मखखनझांसी उत्तर प्रदेश, आदेश शर्मा पत्रकार लखनऊ उत्तर प्रदेश, एन श्रीकांत रेड्डी हैदराबाद तेलंगाना, जे. राजु हैदराबाद तेलंगाना, के. पोयच्चा हैदराबाद तेलंगाना, के. रोजा हैदराबाद तेलंगाना, टी. संगीता हैदराबाद तेलंगाना, पी. संतोषा हैदराबाद तेलंगाना, के. विद्यराणी हैदराबाद तेलंगाना, पी. राधिक हैदराबाद तेलंगाना, के. शिवलीला हैदराबाद तेलंगाना, आलोक कुमार तिवारी पत्रकार पूर्वी चंपारण बिहार, दिनेश तिवारी कवि गीतकार दिल्ली, शैलेश सिंह कुशवाहा वरिष्ठ पत्रकार समाजसेवी ग्वालियर, डॉ लाल सिंह किरार अम्बाह मुरैना मध्यप्रदेश, बीजेन्द्र जैमिनी पानीपत हरियाणा, डॉ जगदीश चन्द्र कुलकर्णी मुंबई, श्रीमती दुर्वा दुर्गेश वारिक गोदावरी गोवा, अंजलि मिश्रा तिवारी बस्तर छत्तीसगढ़, संतोष कुमार पटेरिया महोबा, संजय परगोई नैनीताल उत्तराखंड, कवि गीतकार दिनेश आनंद दिल्ली, कवि गीतकार लालाराम ब्रजवासी डींग राजस्थान, सुरेन्द्र शर्मा गजलकार गाजियाबाद, डॉ कुमार दीपक मंदसौर मध्यप्रदेश, शैलजा सक्सेना शैली गाजियाबाद, उदय बीर सिंह बांदा, कुसुम सिंह सुनैना दिल्ली, कवि नितिन मिश्रा निश्छल सीतापुर उत्तर प्रदेश, सुप्रिया सिंह वीणा गाजियाबाद, जनार्दन सिंह पत्रकार देवरिया उत्तर प्रदेश, डॉ हरिदास बड़ोदे हरिप्रेम मेहरा आमला बैतूल मध्यप्रदेश, विशाल श्रीवास्तव फरुखाबाद, संतोष श्रीवास्तव सम कांकेर छत्तीसगढ़, राजवीर शर्मा वरिष्ठ पत्रकार अम्बाह मुरैना मध्यप्रदेश, रामप्रवेश पंडित मेदिनीपुर पलामू झारखंड, डॉ कुमार महेश भवानी मंडी राजस्थान, डॉ देवीपन्थी नेपाल, डॉ घनश्याम न्योपाने परिश्रमी नेपाल, संतोष श्रीवास्तव सम कांकेर छत्तीसगढ़, राजवीर शर्मा वरिष्ठ पत्रकार अम्बाह मुरैना मध्यप्रदेश, रामप्रवेश पंडित मेदिनीपुर पलामू झारखंड, डॉ कुमार महेश भवानी मंडी राजस्थान, डॉ हरेन्द्र हर्ष बुलंदशहर उत्तर प्रदेश, पीयूष पाणि कोडरमा झारखण्ड, डॉ विजयानन्द प्रयागराज उत्तर प्रदेश, खगेश चन्द्र शर्मा राकेश गाजियाबाद, डॉ अणिमा श्रीवास्तव पटना बिहार, प्रोफेसर (डॉ) मिथिलेश कुमार त्रिपाठी जौनपुर उत्तर प्रदेश, सीमा रंगा इन्द्रा दिल्ली, राजबाला अंतिल सोनीपत हरियाणा, रामेश्वर जी पाटीदार मंदसौर मध्यप्रदेश, डॉ नाथूलाल लोटवाड़ा दिल्ली, अन्नपूर्णा श्रीवास्तव पटना बिहार, कविता प्रसाद पटना, डॉ अनिता सहगल के पहुंचने की स्वीकृति मिल गई है। प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रेरणा स्त्रोत डॉ धर्म प्रकाश वाजपेई दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ लाल सिंह किरार अम्बाह मुरैना मध्यप्रदेश, महासचिव प्रदीप मिश्र अजनबी दिल्ली, सलाहकार मंडल के डा गुंडाल विजय कुमार हैदराबाद तेलंगाना, डॉ शिवशरण श्रीवास्तव अमल बिलासपुर छत्तीसगढ़, राष्ट्रीय प्रवक्ता संतोष कुमार पांडेय सुल्तानपुर, उत्तर भारत के अध्यक्ष अजय पांडेय व अन्य पदाधिकारी व सदस्यों ने अपील की है कि आप सभी प्रेरणा हिंदी प्रचारिणी सभा के ऐतिहासिक आयोजन में शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनावे।

दतिया पुलिस अधीक्षक द्वारा जनसुनवाई में शिकायतो को गंभीरतापूर्वक से सुना गया,

शिकायतों के त्वरित निराकरण हेतु आवेदकों को आश्वस्त किया

संदीप प्रधान उप संपादक की रिपोर्ट

दिनांक 03.09.2024 दिन-मंगलवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय परिसर में जनसुनवाई आयोजित की गई। पुलिस अधीक्षक श्री वीरेंद्र कुमार मिश्रा द्वारा विभिन्न थाना क्षेत्रों आवेदकों की शिकायतो को जनसुनवाई के माध्यम से गंभीरतापूर्वक सुना गया और संबंधित राजपत्रित अधिकारी (पुलिस)/थाना प्रभारी एवं चौकी प्रभारी को त्वरित जॉच कर आवेदक की शिकायत का निराकरण किये जाने के आदेश दिये गये।पुलिस अधीक्षक द्वारा अधीनस्थ अधिकारियों को यह निर्देशित किया गया कि जन सुनवाई के दौरान आने वाले नागरिकों के साथ शिष्ट एवं विनम्र व्यवहार किया जावे। प्रत्येक आवेदक की शिकायतो को ध्यानपूर्वक सुना जाकर एवं निराकरण हेतु सकारात्मक कार्यवाही की जावे।

दतिया अन्तर्राज्यीय पशु चोरी गैंग के तीसरे आरोपी को थाना उनाव पुलिस द्वारा किया गिरफ्तार

तीनों शातिर चोर पशु व्यापारी बनकर, गांवों में भैसो की रेकी करते थे। गिरफ्तार शुदा आरोपी को माननीय न्यायालय में पेश कर जेल भेजा

संदीप प्रधान उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

दिनांक 3/9/24 को पहुँज नदी पुल उनाव झाँसी रोड से आरोपी सोहेल खान (सँयर) पुत्र गुड्डे खान (सैयर) नि. सैयर गेट झॉसी को गिरफ्तार किया गया है, पूँछताछ मे आरोपी के द्वारा बताया गया कि, वह अपने साथी आसिफ खान व आकाश अहिरवार के साथ मिलकर वह दिन में पशु ब्यापारी बनकर भैसो की रेकी करते थे। गिरफ्तार शुदा आरोपी को माननीय न्यायालय पेश कर जेल भेजा गया है

उक्त सम्पूर्ण कार्यवाही में थाना प्रभारी उनाव श्री यादवेन्द्र सिंह गुर्जर, सउनि नीरज सिंह, प्रआर 494 नंद किशोर चौबे, प्रआर 180 सुनील श्रीवास्तव, आर 363 मुनेश बघेल आर 58 भूपेन्द्र गौर आर 850 धर्मेन्द्र प्रजापति आर 744 लोकेन्द्र सिंह की सराहनीय भूमिका रही।स कार्यवाही को किया गिरफ्तार।

घटना विवरण–दिनांक 12/01/24 को फरियादी कैलाश दांगी पुत्र नारायण दांगी ने अपनी चार भैंसे चोरी हो जाने की रिपोर्ट थाना उनाव पर की थी जिसकी रिपोर्ट पर थाना उनाव में अप.क्र. 28/24 धारा 380 भादवि का पंजीबद्ध किया गया था।

पुलिस कार्यवाही– आज श्री अति. पुलिस अधीक्षक श्री सुनील शिवहरे एंव श्री एसडीओपी भाण्डेर श्री कर्णिक श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में थाना उनाव पुलिस के द्वारा अन्तर्राज्यीय पशु चोरी गैंग के तीसरे आरोपी

जनसुनवाई में 94 आवेदकों ने बताई अपनी समस्याएं

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

अधिकारियों ने दिये निराकरण करने के निर्देश

प्रत्येक मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई की कड़ी में 03 सितंबर को कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई का आयोजन किया गया। इसमें अपर कलेक्टर श्रीमती रेखा राठौर एवं डिप्टी कलेक्टर श्री सत्येन्द्र बैरवा ने अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ आवेदकों की समस्याओं को सुना और उनका निराकरण के निर्देश दिए गए। जनसुनवाई में 94 आवेदक अपनी समस्याएं लेकर आए थे। जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए गए।जनसुनवाई में बालाजी हाईटेक सीटी खरगोन के कॉलोनीवासी शिकायत लेकर आये थे कि उनकी कॉलोनी में सीवरेज लाईन एवं ट्रासफार्मर की समस्या है। सीवरेज लाईन से गंदा पानी और मल ओवरफ्लो होकर बहते रहता है, जिससे कॉलोनी में बदबू आती है और मच्छर पैदा हो रहे हैं। कॉलोनी में बिजली सप्लाई के लिए ट्रासफार्मर लगाए गए हैं, लेकिन इनकी सुरक्षा के लिए कोई व्यवस्था नहीं की गई है। अतः उनके कॉलोनी की इन समस्याओं का शीघ्र निराकरण कराया जाए। कसरावद तहसील के ग्राम बरसलाय निवासी सुनिल यादव शिकायत लेकर आये थे कि उनके खेत में लगा ट्रासफार्मर जल गया है। उनके द्वारा इसकी शिकायत बिजली विभाग को की गई है। लेकिन अब तक कोई सुनवाई नहीं हो रही है। ट्रासफार्मर जल जाने के कारण खेती में उन्हें बहुत नुकसान हो रहा है। अतः ट्रासफार्मर को सुधरवाने का कार्य शीघ्र कराया जाए।जनसुनवाई में महेश्वर तहसील के ग्राम खराड़ी के निवासी नरसिंग पिता श्यामा शिकायत लेकर आये थे कि ग्राम मातदां में उनके खेत में सीमेंट कांक्रीट का 35 से 40 फीट गहरा कुआ खोदा हुआ है। अति वर्षा के कारण यह कुआ धसक गया है। जिसके कारण वह अपने खेत में लगी फसलों की सिंचाई नहीं कर पा रहा है। अतः कुए के सुधार के लिए उसे 02 लाख रु

सिने स्टार ओबेरॉय जी का जन्मदिन वृक्षारोपण कर मनाया

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

खरगोन स्तिथ आनंद विहार में मानवाधिकार सुरक्षा संघ के संस्थापक सिने जगत के सुपर स्टार श्री विवेक आनन्द ओबेरॉय जी का जन्मदिन वृक्षा रोपण कर मनाया ओबेरॉय जी का जन्मदिन तीन सितंबर को मनाया जाता है।मानवाधिकार के प्रदेशाध्यक्ष सतीश गांगले जी ने बताया कि वृक्ष हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है उससे हमे शुद्ध ऑक्सीजन मिलती है और पर्यावरण को स्वच्छ रखता है जिससे हम कई बीमारियों से बचने में मदद मिलती है।वृक्षारोपण कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष कमल कुमार गांगले, सचिव धर्मेन्द्र वर्मा, महासचिव राकेश पंड्या, चीफ ब्यूरो मुन्ना खान,अजय भालसे,संजू बामनिया, हीरालाल वास्कले, नीरज मेहता आदि सभी ने पौधे रोपित किए।

कलेक्टर ने जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों पर तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए

जिला मुख्यालय स्तर पर परेशान न होना पड़े इस उद्देश्य से आज की जनसुनवाई नगर परिषद मिहोना में की

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड (ब्यूरो)। कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव द्वारा जिले में नवाचार करते हुए पहल प्रारंभ की अब राज्य सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम जनसुनवाई में दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों के आमजनों को उनके निवास के समीप ही समस्याओं और शासन की योजना का लाभ मिल सकेगा और उन्हें दूरदराज से अपनी समस्याओं को लेकर जिला मुख्यालय स्तर पर परेशान न होना पड़े। कलेक्टर भिण्ड श्री श्रीवास्तव ने तहसीलों में जाकर जनसुनवाई लेने का निर्णय लिया है।

नगर परिषद मिहोना में कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव की अध्यक्षता में जनसुनवाई का आयोजन किया गया। जनसुनवाई में कलेक्टर ने आवेदकों की बात सुनी और प्राप्त आवेदनों पर गंभीरतापूर्वक कार्यवाही करने के संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए।जनसुनवाई कार्यक्रम में एसडीएम लहार विजय यादव,नगर परिषद सीएमओ सहित तहसील स्तर के विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे और आवेदनों पर त्वरित कार्रवाई के लिए निर्देशित किया। जनसुनवाई कार्यक्रम के दौरान कलेक्टर ने गंभीर बीमारी से संबंधित इलाज, विद्युत बिलों में सुधार, हैण्डपंपों का संधारण, पेंशन, स?क दुर्घटना सहायता, हितग्राही मूलक योजनाओं में बैंक ऋण, बीपीएल राशन कार्ड, जमीन पर कब्जा एवं प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत कराने से संबंधित आवेदनों पर कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके संबंध में आवेदक को भी कार्यवाही से अवगत कराने के निर्देश भी दिए।कलेक्ट्रेट में आयोजित शासन की महत्वाकांक्षी योजना जनसुनवाई में अपर कलेक्टर लक्ष्मीकांत पाण्डेय ने आवेदकों की समस्याओं, शिकायतों को सुना और उनका निराकरण किया। कुछ प्रकरणों में संबंधित जिला अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही एवं शीघ्र निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई के दौरान 91से अधिक आवेदन आए जिन पर संबंधितों को भेजकर कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर श्रीमती शिवांगी अग्रवाल सहित अन्य अधिकारी, शहरी एवं ग्रामीणजन उपस्थित थे।

ध्यान से समाधि की ओर

समाधि में जाने से पहले ध्यान से होकर गुजरना पड़ता है,ध्यान एक ऐसी अवस्था है,जिसमें आप समस्त शरीर का अनुभव छोड़कर सिर्फ मस्तिष्क पर अपना संपूर्ण ध्यान केंद्रित करते हैं,उसके पश्चात घने अंधेरे में सिर्फ मस्तिष्क के अंदर एक प्रज्वलदीप किरण या बिंदु अंकित होता है,जिस पर आप संपूर्ण ध्यान की प्रक्रिया को करते हैं,जैसे - जैसे आप ध्यान की अवस्था बढ़ाते हैं वैसे - वैसे आप समाधि की ओर बढ़ रहे होते हैं ।

ध्यान वह मुद्रा है,जो हमें हमारे ब्रह्मांड में व्याप्त ऊर्जा के संपर्क में आने का मार्ग प्रशस्त करती है,जिसके कारण हमें कई आकाशीय अनुभव भी प्राप्त होते हैं । सुप्त अवस्था में ध्यान वह मुद्रा है,जिसमें हम संसार से अलग हो जाते हैं और अपने ही मस्तिष्क के किसी बिंदु पर अपना पूरा केंद्र स्थापित कर देते हैं । सप्त चक्र में पड़ी हुई ऊर्जा जो की एक कुंडलिनी के रूप में हमारे नीचे है,वह ध्यान अवस्था ऊँ उच्चारण के साथ ही किसी पारे की तरह हमारे मस्तिष्क में एक चमकीली ऊर्जा के रूप में हमें दिखाई देने लगती है और इसी से हमारा आभामंडल भी तैयार होता है ।जब हम निरंतर ध्यान करते है,तो कई अनुभव भी होते हैं,इसके लिए हमें मानसिक रूप से तैयार रहेना चाहिए । अब हम ओझा,तांत्रिक या अघोरी तो है,नही इसीलिए इन अनुभवों से कई बार हम डर जाते हैं,यहां उसकी बात की जा रही है,कि पहले अपने आप को तैयार करना पड़ता है,इन अनुभवों को सिर्फ स्वप्न की भाती ही लेना चाहिए और मन मस्तिष्क को स्वस्थ रखने की सोचना चाहिए,जब धीरे-धीरे डरावने अनुभव समाप्त हो जाएंगे तो आपको सकारात्मक अनुभव होना शुरू हो जाएंगे यह बिल्कुल एक शुद्धिकरण के भांति है,जो आपके मन मस्तिष्क के विकास में काम आता है, जैसे - जैसे आप सकारात्मक होते जाएंगे वैसे - वैसे आप ईश्वर के साथ सनिकटता महसूस होगी समस्त अच्छे कार्यों में ईश्वर ही नजर आएंगे ।ध्यान के कारण हमारी सारी इंद्रियों पर हमारा नियंत्रण हम पा लेने में समर्थ हो जाते है,इसे अंग्रेजी में लोग मेडिटेशन का नाम देते हैं पर मेडिटेशन सिर्फ वैचारिक रूप से अपने आप को शांत करने तक सीमित है,जबकि ध्यान की कोई सीमा नहीं ।

नगर पालिका खरगोन द्वारा परिवाद समिति की बैठक सम्पन्न

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

नगरपालिका परिषद खरगोन द्वारा शासन निर्देशानुसार गठित परिवाद समिति की सामान्य बैठक का आयोजन 02 सितंबर को किया गया। बैठक में पीठासीन अधिकारी श्रीमती पूजा पटेल, उपयंत्री, सदस्यगण सुश्री रेखा त्रिवेदी, श्रीमती शिवानी पाटीदार, श्रीमती प्रतिभा आर्य उपस्थित रहे।बैठक में मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किए जा रहे कार्यस्थल पर महिलाओं के मूल अधिकारों की रक्षा करने के लिए अधिनियम की धारा 19 (ग) के अनुसार महिला कर्मचारियों को सुग्राही बनाने के लिए कार्यशालाओं/प्रशिक्षण का आयोजन नियमित अंतराल से किये जाने का निर्णय लिया गया है। वही महिलाओं की सुरक्षा के लिए कार्यालय में स्थापित सीसीटीवी कैमरों का संचालन एवं संधारण नियमित रूप से जांच कर समय-सीमा बैठक में रिपोर्ट ली जाना, कार्यालय में उपस्थित होने वाले प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी एवं नागरिक की उपस्थिति संबंधी रिकार्ड एक पंजी में दर्ज करने, जिसमें संबंधित का नाम, पता, मोबाईल नंबर, आधार नंबर आदि का उल्लेख हो, कार्यालय में अधिकारी कर्मचारी के उपस्थित होने एवं बाहर जाने के समय का उल्लेख होना चाहिए। साथ ही कार्यस्थल पर किसी भी अधिकारी/कर्मचारी या नागरिक के द्वारा मादक पदार्थों के सेवन पर प्रतिबंध लगाते हुए त्रुटिकर्ताओं के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाना चाहिए। इस प्रकार बैठक में निर्णय लेते हुए आगामी समय में पुनः विस्तृत रिपोर्ट के साथ बैठक का आयोजन किए जाने का निर्णय लिया गया।

जिले की 03.20 लाख लाड़ली बहनों के खाते में जमा होगी 39.11 करोड़ रुपये की राशि

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

मुख्यमंत्री 04 सितंबर को बीना में आयोजित कार्यक्रम में सिंगल क्लिक से अंतरित करेंगे राशि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 04 सितंबर 2024 को सागर जिले के बीना में आयोजित एक कार्यक्रम के माध्यम से मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की हितग्राही बहनों के खातों में सिंगल क्लिक के माध्यम से राशि अंतरित करेंगे। महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती भारती आवास्या ने बताया कि खरगोन जिले की कुल 03 लाख 20 हजार 649 बहनों के खाते में लाड़ली बहना योजना की 39 करोड़ 11 लाख 40 हजार 450 रुपये की राशि अंतरित होगी। इसमें 03 लाख 04 हजार 531 बहनों के खाते में 1250-1250 रुपये की दर से 38 करोड़ 06 लाख 63 हजार 750 रुपये की राशि जमा होगी। इसी प्रकार पेंशन योजना की हितग्राही 16 हजार 118 बहनों के खाते में 650-650 रुपये की दर से 01 करोड़ 04 लाख 76 हजार 700 रुपये की राशि जमा होगी। मुख्यमंत्री लॉडली बहना योजना की पात्र हितग्राही बहनों को माह सितम्बर 2024 की राशि भुगतान आदेश बनाये जाकर बैंक को भेजे गये है।

शिवपुरी पुलिस द्वारा थाना स्तर पर ली गई शांति समिति की बैठक

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी - आगामी त्यौहारों को लेकर सभी थाना प्रभारियों एवं समस्त एसडीओपीगणों को अपने-अपने थाना क्षेत्र में शांति समिति की बैठक लेने के लिए निर्देशित किया गया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय श्री संजीव मुले के मार्गदर्शन में थाना देहात, फिजिकल, इंदार, तेन्दुआ, रन्नौद, खनियाधाना, मायापुर, सतनवाड़ा, बम्हारी, पोहरी, सिरसौद, छर्च, दिनारा, सीहोर में थाना प्रभारी द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र के धार्मिक गुरूयों एवं झांकी आयोजकों के साथ शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में सभी को पुलिस द्वारा आयोजकों से की जा रही निम्न अपेक्षाओं के बारे में बाताया गया- सभी झांकियां पूर्व से निर्धारित स्थानों पर ही लगाई जाए एवं झाकी के चारों ओर बैरीकेटिंग हो।पाण्डालों में प्रकाश व्यवस्था हेतु लगे बिजली के तारों को खुला न छोड़ें। आगजनी से सुरक्षा हेतु अग्निशामक यंत्र एवं रेत आदि रखेंगे। प्रतिमा स्थल एवं चल समारोह के दौरान प्रयोग होने वाले ध्वनि विस्तारक यंत्रों के संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार ही इनका प्रयोग करें।पाण्डाल में सुरक्षा हेतु रात्रि में भी कम से कम एक कार्यकर्ता उपस्थित रहें।गणेश प्रतिमाओं, झांकी के चल समारोह को पूर्व से निर्धारित पारंपारिक मार्ग पर ही निकालें।

संपादकीय

पक्षियों पर भी कहर बरपाती बारिश

वास्तव में अति बारिश जैसी आजकल हो रही है. न केवल पक्षियों के घोसलों को गीला और असुविधाजनक बना देती है. बल्कि उनके लिए भोजन ढूंढना या खुद को गर्म रखना भी मुश्किल कर देती है। लंबे समय तक बारिश के कारण पक्षी डाइपोथार्मिया या भूख से मर जाते हैं। इन दिनों बारिश शुरू होते ही. चाहे वह कितनी ही मूसलाधार और जानलेवा ही क्यों न हो. सोशल मीडिया में कई रोमांच वीर तरह–तरह की भाव–भंगिमाओं वाली सेल्फी शेयर करने लगते हैं। लेकिन जब हम पक्षियों से जंगल और उनके घर यानी पेड़ छीनकर कंक्रीट के बसेरे में बारिश का लुत्फ ले रहे होते हैं. ठीक उन्हीं पलों में लाखों पक्षी बारिश से बेबस होकर जान दे रहे होते हैं। जी. हां यह कोई काल्पनिक रूदन नहीं है. सैकड़ों वाइल्डलाइफ फोटोग्राफरों का मावुक कर देने वाला अनुभव है। वास्तव में अति बारिश जैसी आजकल हो रही है. न केवल पक्षियों के घोसलों को गीला और असुविधाजनक बना देती है. बल्कि उनके लिए भोजन ढूंढना या खुद को गर्म रखना भी मुश्किल कर देती है। लंबे समय तक बारिश के कारण पक्षी हाइपोथार्मिया या भूख से मर जाते हैं। हां जब उनके घने जंगल थे. जंगलों में पत्तों से भरे पेड़ थे तब उनके लिए भी बारिश पिकनिक होती थी। लेकिन अब हर गुजरते साल उनके लिए बारिश एक जानलेवा बुरा अनुभव बनती जा रही है। पक्षियों के लिए जानलेवा अति बारिश में उनके जलरोधी पंख वास्तव में शिथिल हो जाते हैं और उनका सिर भीग जाता है। इससे उन्हें ठंड लग जाती है और वे मर जाते हैं। छोटे पक्षी अक्सर भारी बारिश में आश्रय खोजने की कोशिश में परेशान देखे जाते हैं। दरअसल. पक्षी अपने पंखों के नीचे हवा की छोटी–छोटी परतें बनाकर रखते हैं. जो उन्हें गर्म रखती हैं। लेकिन जब बारिश अति में हो रही हो तो वे हार जाते हैं। इस स्थिति में बारिश के संपर्क में आने वाले अमेरिकी केरट्रेल अपनी चयापचय दर को बढ़ाते हैं. संभवत: गर्मी के नुकसान की भरपाई के लिए। लेकिन देखा गया है कि पक्षी जितना छोटा होता है. अति बारिश उसके लिए उतनी ही डरावनी होती है। क्योंकि छोटे पक्षियों का सतह–क्षेत्र–से–आयतन अनुपात अधिक होता है. जिसका अर्थ है कि वे अधिक तेजी से गर्मी खो देते हैं. और उनके पास आम तौर पर कम ऊर्जा भंडार होते हैं। यही कारण है कि अक्सर मूसलाधार बारिश के दौरान देखने में आता है कि छोटे पक्षी बदहवासी से आश्रय की तलाश में होते हैं जबकि टर्की गिद्धों का झुंड पेड़ की चोटी पर पंख फैलाकर बारिश में नहाता हुआ देखा जाता है। वही जिन पक्षियों को यह सुविधा होती है. वे बारिश के समय झाड़ियों के झुरमुटों में. नरकटों में. इंसानी घरों के छज्जों के नीचे. अपने घोसले के छिद्रों में छिपने या बचने की कोशिश करते हैं। लेकिन यह पक्षियों को अनिवार्य रूप से हासिल कोई सुनिश्चित सुविधा नहीं है और हो भी तो आखिर पक्षियों को नियमित खाने की भी तो जरूरत होती है। सच में भूख पक्षियों के लिए बारिश का दूसरा खतरा है। आप कुछ मिनटों या घंटों की बारिश में तो छिप सकते हैं. लेकिन एक हफ्ते तक चलने वाली बारिश में क्या करेंगे? दरअसल. जब बारिश शुरू होती है तब तो पक्षी कुछ समय के लिए गायब हो जाते हैं. लेकिन अगर यह कुछ समय तक लगातार होती है. तो पक्षी फिर से दिखाई देने लगते हैं। क्योंकि वे भोजन की तलाश बंद नहीं कर सकते हैं. खासकर अगर उनके पास खिलाने के लिए चूजे हों। दरअसल. पक्षी बहुत कम खाते हैं. इसलिए उन्हें बार–बार खाना पड़ता है। दरअसल. बारिश की तीव्रता भी फर्क डालती है। उनके लिए भारी बारिश बहुत खतरनाक होती है। इससे निपटने के लिए उन्हें अलग से रणनीति बनानी पड़ती है। कई बार हम देखते हैं भीग रहे पक्षी अपने पंख फुला लेते हैं. क्योंकि पंखों को फुलाना उन्हें गर्म रखता है। लेकिन यह खतरनाक भी है। अगर बारिश बहुत भारी है. या यह नहीं थमती तो पानी उनके फूले हुए पंखों के अंदर से चला जाता है। भारी बारिश में कई बार पक्षियों की एक और क्लासिक मुद्रा देखने को मिलती है। जिससे सिर पीछे की ओर. चोंच बारिश की ओर. शरीर सीधा और पंख चिकने। यह एक ऐसी मुद्रा है जिसमें कोई पक्षी खुद को गर्म रखने की कोशिश करता है। क्योंकि सिर पीछे की ओर की मुद्रा एक गर्मी–संरक्षण की स्थिति है। इसका मकसद पक्षी को बारिश के संपर्क में कम से कम आना है और बारिश की बूंदें शरीर में अवशोषित होने की बजाय पंखों से नीचे फिसल जाती हैं। पक्षी इस मुद्रा को तब अपनाते हैं. जब उनके पास आश्रय की सुविधा न हो। लेकिन यह स्थिति तब बड़ा जोखिम बन जाती है.जब कई कई घंटे बारिश थमती ही नहीं।

चिंतन और वैचारिक क्षमता को जिंदा रखिये

संजीव ठाकुर

जो मानव समाज तथा मानव अधिकारों की संवेदना तथा धाराओं का उल्लंघन भी है। किसी स्वस्थ स्वतंत्र राष्ट्र के लिए व्यक्ति समाज और राष्ट्र के विचारों की स्वतंत्रता नवीनता तथा उत्कृष्टता अत्यंत आवश्यक है।

विचार और सिद्धांत व्यक्ति के अंदर की अंत: प्रज्ञा होती है। और यह सिद्धांत तथा अंत: विचारधारा जनमानस तक पहुंचने से बाधित किया जाए अंतरात्मा को प्रभावित करती है और इसके गहरे प्रभाव से व्यक्ति वह सब कर सकता है जो बिना मार्गदर्शन के व्यक्ति नहीं कर सकता। प्राचीन काल से अब तक वैचारिक सिद्धांत और विचारधारा सदैव समाज के दिग्दर्शक मार्गदर्शक रहे हैं। इनकी भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है।यदि यही सिद्धांत और अंतःप्रज्ञा जनमानस आत्मसात कर लेता है. तो इसका प्रभाव एक जन आंदोलन का रूप ले लेता है और यहीं से युग परिवर्तन की लहर प्रस्फुटित होती है। प्राचीन यूनान में एक बहुत ही कुरूप किंतु विद्वान व्यक्ति सुकरात हुआ करते थे. उनके विचारों में मौलिकता नयापन जनजागृति की अद्भुत क्षमता थी। उनकी विद्वता के कारण आम जनमानस होने राजा से ज्यादा महत्व और बुद्धिमान मानते थे। राजकीय तानाशाही के चलते उनके विचारों के कारण उनको मृत्युदंड दे दिया गया। जहर का प्याला पीने के बाद भी विद्वान चिंतक सुकरात अमर हो गए. उनकी विचारधारा आज भी जीवित है. एवं लोग उसे अपनाकर अपना जीवन सुधारने में इसका उपयोग करते हैं। अब्राहम लिंकन ने अमेरिकी स्वतंत्रता के बाद दास प्रथा के बारे में कहा था कि दास भी मनुष्य हैं. उन्हें भी उतना ही जीने का अधिकार है जितना स्वामी को है। अब्राहम लिंकन के आंदोलनकारी विचार से तत्कालीन समय में अमेरिका के लोग घबरा गए थेऔर उनकी हत्या कर दी गई थी। पर अब्राहम लिंकन के विचारों ने दास प्रथा के उन्मूलन की अंतर आत्मा को जागृत कर दिया था और जनमानस ने अपने अधिकारों के लिए लड़ते हुए दास प्रथा से मुक्ति पाई थी। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि हम जो सोचते हैं वही बन जाते हैं। विचार एवं सिद्धांत ही व्यक्ति का निर्माण करता है। वही दुष्ट होने या महान होने का निर्णायक है। और बिना विचारों सिद्धांतों के व्यक्त व्यक्ति का अस्तित्व ही नहीं । विवेकानंद जी के विचार सर्व कालीन प्रासंगिक है। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं. जितने उनके जीवित रहते हुए थे। आज हमारे बीच विवेकानंद जी स शरीर मौजूद नहीं है पर उनके विचारों की महत्ता कायम है।भौतिक शरीर के नष्ट हो जाने से और भौतिक विचार तथा सिद्धांत उतनी ही तीव्रता रखते हैं. वेग रखते हैं. जो एक समाज में परिवर्तन ला सकती है ।विचारों की यह अमरता तथा तीव्रता किसी भी तानाशाह के लिए इतनी खतरनाक है जितनी की सुप्त शेर की गुफा में रहना। जनता के मध्य शुद्ध विचारधारा के जागृत होने पर क्रांति लाई जा सकती है। फिर चाहे वह फ्रांस के वर्साय के महल का विध्वंस हो अथवा भारत की स्वतंत्रता हेतु वृहद आंदोलन हो। व्यक्ति या व्यक्तियों के दबाव को दबाने के बाद विचारों की पीढ़िता ने जनसामान्य को एक गरजते हुए सिंह में तब्दील कर दिया था। यह शाश्वत सत्य है कि व्यक्ति को जरूर आप दबा सकते हैं.पर विचारधारा सिद्धांत अजर अमर होते हैं.और वही युग निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाते हैं।विचारों के संदर्भ में कहा जाता है कि एक व्यक्ति का विचार तब तक उस व्यक्ति के पास है. जब तक वह अकेला है किंतु जैसे ही विचारधारा एवं सिद्धांत का प्रचार प्रसार होता है. तो वह व्यक्ति अकेला ना रह कर उस जैसे हजारों लाखों लोग उसके साथ हो जाते हैं। तब वह अकेला नहीं रह जाता। वह अपने विचारों के माध्यम से जन सामान्य को प्रभावित कर लोगों को उस लड़ाई में शामिल कर लेता है. जिस लड़ाई के वह कभी अकेले नहीं लड़ सकता था। विचारों सिद्धांतों की तीव्रता आवेश तथा सघनता किसी भी क्रांतिकारी लक्ष्य की प्राप्ति में एक बड़ा साधक हो सकता है। विचार व सिद्धांत एक से दूसरे व्यक्ति तक स्थानांतरित होते रहते हैं। जिसमें विचारों को सघनता प्राप्त होती है। ताकि सत्ता के दमन के समय वैचारिक अमरता बनी रहे। चीन उत्तर कोरिया जैसे राष्ट्रों में विचारों के इस स्वतंत्र का प्रवाह को बाधित नियंत्रित कर दिया गया। अभिव्यक्ति के तमाम माध्यमों को प्रतिबंधित कर दमन चक्र चलाया गया। वहां विचार और सिद्धांत विद्वान व्यक्ति तक ही सीमित रहे उसका फैलाव या विस्तार नहीं हो पाया। जो मानव समाज तथा मानव अधिकारों की संवेदना तथा धाराओं का उल्लंघन भी है। किसी स्वस्थ. स्वतंत्र राष्ट्र के लिए व्यक्ति समाज और राष्ट्र के विचारों की स्वतंत्रता नवीनता तथा उत्कृष्टता अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि विचारधारा और सिद्धांतों को रोक पाना किसी भी सत्ता या निरंकुश राजा के नियंत्रण में नहीं होता। विचारों और सिद्धांत अनादि काल से गतिशील है तथा अनंत तक जगत तक गतिशील रहेंगे.और उसका प्रतिपादक एवं अनुशीलन कर्ता विचारों के साथ अमर हो जाते हैं।

महिला विरोधी अपराध के दलदल में भद्रलोक

उमेश चतुर्वेदी

बंकिम चंद्र की शस्य श्यामला माटी वाला पश्चिम बंगाल शक्ति पूजक समाज है। शरद ऋतु के स्वागत के साथ बंगाल की धरती दुर्गा के स्वागत में हर साल विभोर होती रही है। बंगाल में महिलाओं का सम्मान की कैसी परंपरा है इसे समझने के लिए दुर्गा पूजा के विधान को समझना चाहिए। जहां मूर्ति बनाने के लिए उन वेश्याओं के घर से पहली मिट्टी लाई जाती है जिन्हें आम तौर पर समाज त्याज्य और गंदा मानता है। बंगाल की धरती कैसी नारी पूजक रही है. किस तरह वह नारियों का सम्मान करती रही है. इसके उदाहरण आजादी के आंदोलन के इतिहास में जैसे मिलते हैं. अन्य राज्यों में कम। स्वाधीनता संग्राम में जिन तीन महिलाओं ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया और अपने ज्ञान और संघर्ष से भारत को आलोकित किया वे तीनों बंगाल की बेटियां थी। पहली थीं अरूणा गांगुली. जो बाद में अरूणा आसफ अली बनीं. दूसरी थीं सुचेता मजूमदार जो बाद में सुचेता कृपलानी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। तीसरीं थीं सरोजिनी चट्टोपाध्याय जो बाद में भारत कोकिला सरोजिनी नायडू बनीं। बंगाल की माटी नारी की कितना सम्मान करती रही है. उसका एक और उदाहरण कमला देवी चट्टोपाध्याय भी रहीं। जब भारत के अन्य इलाकों की महिलाएं घूंघट के पीछे सिर्फ परिवार के कोल्हू में पिस रहीं थीं. तब बंगाल ने अपनी बेटियों को वाजिब सम्मान दिया और उन्हें आगे बढ़ाया। उस बंगाल में कभी महिलाओं के साथ बदसलूकी की कल्पना तक नहीं की जाती थी। वहां अब हालात कैसे बदल गए हैं. इसका अंदाजा लगाने के लिए राधागोविंद कर अस्पताल में हुई घटना को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। समूचा देश अपनी आजादी की 77 वीं सालगिरह के जश्न में थककर पंद्रह अगस्त की रात जब मीठी नींद के आगोश में था भद्रलोक की राजधानी कोलकाता के राधा गोविंद कर यानी आरजी कर अस्पताल में जूनियर रेजिडेंट डॉक्टर की बर्बरता पूर्वक रेप के बाद हत्या कर दी गई। बंगाल में देर रात तक दफ्तर से लौटने वाली लड़कियों की कमी घरवाले चिंता तक नहीं करते थे अब वे परेशान हो उठे हैं। बंगाल के लोग अपनी बच्चियों के लिए चिंतित हो उठे हैं। बंगाल की धरती पर शायद यह पहली ऐसी घटना है जिसमें किसी महिला के साथ ऐसी बर्बरता की गई है। इससे शक्तिपूजक बंगाली समाज का क्रोध और क्षोभ से भरना स्वाभाविक है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम बंगाल इकलौता ऐसा राज्य है जिसे महिला मुख्यमंत्री का गौरव हासिल है। महिला के राज में किसी महिला के साथ ऐसा दुराचार लोगों के गले आसानी से नहीं उतर रहा। इसलिए बंगाल इन दिनों खौल रहा है। बंगाल के चुनिंदा बुद्धिजीवियों को छोड़ दें तो समूचा बौद्धिक समाज सड़कों पर उतर आया है। जो चुप हैं या व्यवस्था की तरफदारी कर रहे हैं. वे सत्ताधारी पार्टी के साथ हैं. सांसद या किसी अन्य पद पर है। अभी बहुत दिन नहीं हुआ जब पश्चिम बंगाल के संदेशखाली से भी महिलाओं से बलात्कार की खबरें सामने आई थीं। वहां की घटना की जब परतें खुलने लगीं तो पता चला कि रेप की घटनाएं अपराध और राजनीति के नापाक गठजोड़ का नतीजा हैं। संदेशखाली को लेकर बंगाली समाज में उबाल तो आया. लेकिन वैसा नहीं. जैसा आरजी कर अस्पताल की दुराचार के बाद दिख रहा है। शायद संदेशखाली की पीड़िताएं ग्रामीण इलाकों की हैं. जबकि आरजी कर की घटना उस कोलकाता शहर की है जिसे भद्रलोक समाज के लिए जाना जाता है। पश्चिम बंगाल की कड़वी सच्चाई बांग्लादेश से हो रही अवैध घुसपैठ। अवैध घुसपैठियों के समर्थन में बीजेपी छोड़ तकरीबन समूचा बंगाली राजनीति है। 34 साल के वामपंथी शासन के दौरान इस घुसपैठ को वैधता मिली। वामपंथी शासन व्यवस्था के दौरान पार्टी कैडर के नाम पर बड़ा झुंड उभरा। सरकार पर संगठन का नियंत्रण होना चाहिए लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसे स्वीकार किया जा सकता है। लेकिन संगठन की ओर से समानांतर व्यवस्था चलाना और शासन में हर स्तर पर हस्तक्षेप शासन की निष्पक्षता को तो खत्म करता ही है. शासन को पंगु भी बना देता है। प्रांत से लेकर ब्लॉक स्तर तक स्थापित वामपंथी व्यवस्था ने ऊपर से नीचे तक प्रशासन को अपना गुलाम बनाने में कामयाब रहा। प्रशासन और समानांतर पार्टी व्यवस्था ने मिलकर अपराध और राजनीति का मजबूत गठजोड़ बनाया। इस गठजोड़ में पैसा था पॉवर था ताकत थी। नीचे से मिले पैसे ऊपर तक पहुंचते रहे। जनता ठगी जाती रही है। पश्चिम बंगाल का समाज उस संस्थानिक व्यवस्था से इतना परेशान था कि संघर्षशील ममता बनर्जी में नई उम्मीद दिखी। बंगाली समाज को लगा कि

संघर्षशील ममता नई बयार बनकर पश्चिम बंगाल की व्यवस्था में जमी काई को साफ कर देगी। उन्हें उम्मीद थी कि ममता अपने राजनीतिक औजारों से बंगाल की व्यवस्था में जमे नासूर को साफ कर देंगी। लेकिन अफसोस ऐसा नहीं हुआ। ममता भी उसी कदम पर चल पड़ी। निचले स्तर पर जो वामपंथी कैडर था. वह ममता का कार्यकर्ता बन गया। अवैध घुसपैठ बनती रही। घुसपैठियों या पूर्वी बंगाल के लोगों को पश्चिम बंगाल को लोग बांगाल बोलते हैं। कहने का मतलब यह है कि बांगाल के हवाले होती रही राजनीति और सीमा के पार तक के अल्पसंख्यक तुष्टिकरण से प्रशासन लगातार या तो पंगु होता गया या फिर सत्ताधारी तंत्र का चारण बनता गया। प्रशासन का यह चारण रूप 16 अगस्त को भी दिखा जब आरजी कर की पीड़िता की रिपोर्ट साढ़े ग्यारह बजे रात को दर्ज की गई जबकि उसके साथ बलात्कार और उसका मर्डर पंद्रह अगस्त की रात को दो से ढाई बजे के बीच हो चुका था। इसे सुप्रीम कोर्ट ने भी नोटिस किया और कोलकाता पुलिस को डांट भी पिलाई। सुप्रीम कोर्ट जजों ने तो यहां तक कहा कि अपने तीस साल में ऐसा कभी होते नहीं देखा। पश्चिम बंगाल में ही हो सकता है कि भ्रष्टाचार के आरोप में पुलिस अधिकारी के घर केंद्रीय एजेंसी छापा मारने पहुंचे तो मुख्यमंत्री खुद दल बल अपने भ्रष्ट अधिकारी के पक्ष में धरना देने पहुंच जाएं। कुछ इसी अंदाज में ममता की अगुआई में कोलकाता में बलात्कार और कत्ल की घटना के विरोध में धरना दिया गया। कह सकते हैं कि यह सरकार के खिलाफ सरकार का धरना था। ऐसा दुनिया के किसी भी लोकतांत्रिक समाज में कम से कम अब तक तो नहीं ही देखा गया है। ममता ने चूंकि प्रशासन में किसी तरह का गुणात्मक बदलाव नहीं किया. बल्कि वामपंथ जैसी कैडर व्यवस्था विकसित कर ली और उसे छूट दी। अल्पसंख्यक कार्यकर्ताओं और नेताओं के सामने स्थानीय पुलिस झुकने को मजबूर हो गई। इससे राज्य में अपराध बढ़ा और पुलिस का इकबाल कम हुआ। पुलिस का भरोसा अगर बना रहता तो शायद पश्चिम बंगाल में अपराध की घटनाएं इतनी ज्यादा नहीं बढ़तीं। पुलिस की लाचारगी तो आरजी कर बलात्कार में बार–बार नजर आई है। बंगाल के बारे में कहा जाता रहा है कि बंगाल जो आज सोचता है. वैसी सोच भविष्य में दूसरे राज्यों की होती है। लेकिन बलात्कार और बढ़ती अपराध की घटनाओं को लेकर नहीं कह सकते कि बंगाल से बाकी राज्यों में उससे ज्यादा हो सकता है। ऐसी सोच होनी भी नहीं चाहिए। लेकिन यह उम्मीद जरूर करनी चाहिए कि आगे की सोच रखने वाला भद्रलोक इस दिशा में भी सोचेगा। उसका गुस्सा एक ऐसे बंगाल की रचना करेगा जहां की धरती में रवींद्र संगीत गूंजता रहेगा. जहां बंकिम के गीत गाए जाते रहेंगे। जहां उसकी नारियां स्वाधीन ढंग से काम कर सकेंगी और समाज में निर्भीक तरीके से आगे बढ़ सकेंगी। जिसमें सिंदूर खेला होगा घुघुंची नृत्य होगा दुर्गा देवी की पूजा होगी।

यूटर्न के दौर में मोदी सरकार

प्रेम शर्मा

मोदी सरकार अपने तीसरे कार्यकाल में एक के बाद एक फैसलों पर यू–टर्न लेती दिख रही है। लेटरल एंट्री. न्यू पेंशन स्कीम. ब्रॉडकास्टिंग बिल के ड्राफ्ट से लेकर वक्फ संशोधन एक्ट और लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन जैसे मुद्दे शामिल हैं। हालांकि मीडिया के माध्यम एवं लघु संवर्ग पर सरकार की तरफ से जो अप्रत्यक्ष शिकंजा कसा जा रहा है उस तरफ किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। जबकि यह संवर्ग बिना लागलपेट हमेशा भाजपा के पक्ष में रहा है। खास बात है कि प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस सरकार के यू–टर्न पर खूब खुश नजर आ रही है। इतना ही नहीं वह यह संदेश देने की भी कोशिश कर रही है कि किस तरह से नरेंद्र मोदी सरकार अपने तीसरे कार्यकाल में में विपक्ष और अपने सहयोगी दलों के दबाव में अपने फैसलों पर पीछे हटने को मजबूर हो रही है। हालांकि सरकार की तरफ से यू–टर्न के पीछे अपने तर्क दिए जा रहे हैं। सरकार से जुड़े लोगों का कहना है कि सरकार की तरफ से यह कदम जनता की प्रतिक्रिया के प्रति जागरूक होने के का प्रतीक है। सरकार कांग्रेस की रणनीति को ध्वस्त करती जा रही है। लोकसभा चुनाव में आशा के विपरीत आए चुनाव परिणाम और मजबूरी में सहयोग लेकर सरकार बनाने के बाद से मोदी सरकार में लगातार रहे उलटफेर या यू–टर्न से दबाव का संकेत मिलता है। अनुसूचित जातियों में क्रीमी लेयर पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को वापस लेना हो या फिर लेटरल एंट्री पर यू–टर्न। सरकार के इस रुख को देखकर तो लगता है यही लगता है जैसे कुछ लोग मजाकिया अंदाज में कहते हैं कि सरकार को दलित ब्राह्मणों को नाराज करने का डर है। सरकार के यू टर्न लेने के बाद यही सवाल उठ रहा है कि अब राष्ट्र प्रथम के बीजेपी के एजेंडे का क्या हुआ ? इसके अलावा भी कई ऐसे विवादास्पद मुद्दे भी हैं जो ठंडे बस्ते में पड़े हुए है। समान नागरिक संहिता (यूसीसी). वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक 2024. डिजिटल इंडिया अधिनियम और नई औद्योगिक नीति सहित कई आर्थिक सुधारों को टाला जा सकता है। इसके बजाय. सरकार को जाति जनगणना के लिए विपक्ष की मांगों का सामना करना होगा। दूसरी ओर मध्य प्रदेश में चल रहे किसानों आंदोलन. खुल मवेशी. बिजली आपूर्ति. बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दे और विरोध प्रदर्शन से भाजपा की साख पर असर पर रहा है विपक्षी दल इस तरह के मुद्दो को लगातार हवा दे रहे है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रणनीति विदेशी मोर्चे पर ध्यान केंद्रित करने की है। ये बात रूस. यूक्रेन की हालिया यात्राओं और सितंबर में होने वाली अमेरिका दौरे से पता चलता है। इसी तरह अग्निपथ योजना और जातिगत जनगणना को लेकर विपक्ष मोदी सरकार पर लगातार हमला कर रहा है। यही नही एनडीए के सहयोगी दल भी इन मुद्दों पर मुखर हो रहे हैं। चिराग पासवान तो जातिगत जनगणना के पक्ष में खुल कर बोल रहे हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी कई मौकों पर यह कह चुके हैं सरकार 'अग्निपथ' योजना में और सुधार के लिए बदलाव के लिए तैयार है। सशस्त्र बलों में प्रवेश के लिए दो साल पहले शुरू की गई इस योजना को लोकसभा चुनावों में भाजपा की चुनावी हार के प्रमुख कारणों में एक माना जा रहा है। कांग्रेस ने सत्ता में आने पर अग्निपथ योजना को खत्म करने का वादा भी किया था। जाति जनगणना एक ऐसा मुद्दा है जिसके पक्ष में एनडीए के दोनों प्रमुख सहयोगी दल जेडीयू और एलजेपी सरकार से अलग अपना रुख व्यक्त कर चुके हैं। बिहार में जाति की राजनीति की प्रकृति को देखते हुए यह मुद्दा काफी अहम हैं। खास बात है कि राज्य में अगले साल चुनाव होने हैं। सरकार ने भी जाति जनगणना की सभी मांगों को दृढ़ता से खारिज कर दिया है। सरकार का कहना है कि यह विभाजनकारी कदम साबित होगा। हालांकि. पेंशन योजना समेत प्रमुख मुद्दों पर सरकार ने जिस तरह से दो कदम पीछे खींचे हैं। ऐसे में ऐसे में आने वाले दिनों में पीएम मोदी इस दोनों मुद्दों पर कोई बड़ी घोषणा करें तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। मोदी 3.0 में एनपीएस पर यू–टर्न पहली बार नहीं हुआ है. न ही विपक्ष के दबाव के अंदर सरकार के झुकने की यह पहली मिसाल है.केंद्रीय मंत्री और लोक जनशक्ति पार्टी के प्रमुख चिराग पासवान और जनता दल (यूनाइटेड) के नेता केसी त्यागी ने लेटरल एंट्री नीति पर गांधी के हमले का समर्थन किया था। इसी तरह वक्फ विधेयक पर संयुक्त संसदीय समिति की विपक्ष की मांग को तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के समर्थन के कारण सरकार को इस पर सहमत होना पड़ा। अब सवाल यह उठता है कि क्या फर्क पड़ता है अगर सरकार गठबंधन सहयोगियों की परवाह किए बिना नीतिगत निर्णय ले ? क्या कोई सहयोगी सरकार को इस समय गिराने की कोशिश करेगा ? नीतीश कुमार ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि केवल भाजपा उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाए रखे.क्योंकि यही एकमात्र चीज है जिसकी उन्हें परवाह है। चंद्रबाबू नायडू भी ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें चुनाव से पहले किए गए अपने वादों को पूरा करना है और अपने बेटे लोकेश को उत्तराधिकारी बनाने के लिए ठोस मंच देना है. इससे पहले कि टीडीपी के प्रमुख नई दिल्ली में किंगमेकर बनने के बारे में सोचें. ऐसा चिराग पासवान भी नहीं करेंगे. जो अपने दिवंगत पिता रामविलास पासवान के योग्य उत्तराधिकारी साबित हुए हैं। बिहार में दलितों के बीच अपना आधार मजबूत करने के लिए चिराग मोदी की लोकप्रियता उनके "हनुमान" बनकर भुना रहे हैं।

सोशल मीडिया में 5 बच्चों की मौत का दावा: अधीक्षक बोले इलाज के दौरान एक ही मौत, दो बच्चे मृत लाए गए

रीवा। मंगलवार को रीवा के संजय गांधी अस्पताल में पांच बच्चों की मौत की सूचना सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो गई। जिसके बाद अस्पताल प्रबंधन पर और स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवाल खड़े होने लगे। अब पूरे मामले में संजय गांधी स्मृति अस्पताल की ओर से सफाई दी गई है। पांच बच्चों की मौत की खबर को असत्य और भ्रामक बताया गया है। हाला की अस्पताल प्रबंधन ने अब तक मंगलवार के आंकड़े नहीं दिए हैं। अस्पताल के अधीक्षक राहुल मिश्रा का कहना है कि अस्पताल में इलाज के दौरान एक ही बच्चे की मौत हुई है। जो हृदय रोग से ग्रसित था। इसके अलावा बच्चे को पीलिया की बीमारी भी थी। जिसके बचने की संभावना पहले से बहुत कम थी। 2 सितंबर को कान्हा बुनकर पिता सूरज बुनकर उम्र 6 वर्ष निवासी सज्जनपुर की मृत्यु हुई है। अन्य दो बच्चे मृत अवस्था में अस्पताल ले गए थे। जिनके नाम क्रमशः आशा साकेत पिता मुन्नालाल साकेत उम्र एक महीना (बच्चा) निवासी अमरपाटन जिला सतना और दूसरा प्रियांशु केवट पिता अशोक केवट उम्र 5 वर्ष (बच्चा) निवासी रायपुर कर्चुलियान जिला रीवा है।अस्पताल के अधीक्षक का कहना है की पांच बच्चों की मौत की खबर पूरी तरह से भ्रामक है। सुबह कई सारे व्हाट्सएप ग्रुप में यह जानकारी फ्लैश हो रही थी। जो की निराधार है। हमारे अस्पताल में संभाग भर से जितने भी मरीज रेफर होकर आते हैं। वे गंभीर अवस्था में ही लाए जाते हैं। फिर भी हम अपने स्तर से उन्हें बचाने का पूरा-पूरा प्रयास करते हैं। पूरे मामले में अस्पताल प्रबंधन की ओर से एक विज्ञप्ति भी जारी की गई है।पूरे मामले में रीवा कलेक्टर प्रतिभा पाल का कहना है कि सोशल मीडिया में पांच बच्चों की मौत की खबर वायरल हुई। जिस पर सीएमएचओ से रिपोर्ट मांगी गई। अभी तक अस्पताल में एक ही बच्चे की मौत हुई है। जो गंभीर अवस्था में अस्पताल लाया गया था। जिसके बचने की संभावना कम थी। अन्य दो बच्चे मृत अवस्था में लाए गए। इस तरह से कुल तीन मौतों की सूचना है।

एसडीएम गुढ़ ने किया अस्पताल का निरीक्षण

रीवा। जिले के सभी अस्पतालों में उपचार एवं सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। एसडीएम गुढ़ डॉ अनुराग तिवारी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गुढ़ का निरीक्षण कर सुरक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मौके पर उपस्थित चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश देते हुए एसडीएम ने कहा कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भवन के अंदर और परिसर में प्रकाश की उचित व्यवस्था रखें। अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों के साथ केवल दो परिजनों को ही रहने की अनुमति दें। सुरक्षा के लिए तैनात कर्मचारी वार्डों का भी नियमित भ्रमण करें। सभी डॉक्टर और चिकित्साकर्मी निर्धारित समय पर अस्पताल में उपस्थित होकर रोगियों का उपचार करें। रोगियों और उनके परिजनों से अच्छा व्यवहार करें। अस्पताल में भर्ती महिला रोगियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दें। एसडीएम ने अस्पताल की साफ-सफाई व्यवस्था के संबंध में भी निर्देश दिए। निरीक्षण के समय नायब तहसीलदार तथा चिकित्सा अधिकारी उपस्थित रहे।

बढ़ते शराब और मांसाहार की वजह से देश की व्यवस्था अस्त-व्यस्त होती चली जा रही, नशा छुड़ाने वाले जिम्मेदार भी खुद इसमें फंसे हैं

रेवाड़ी (हरियाणा)इस समय के पूरे समरथ सन्त सतगुरु दुःखहर्ता, उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त जी महाराज ने अधिकृत यूट्यूब चैनल जयगुरुदेवयूकेएम पर लाइव प्रसारित संदेश में बताया कि मांस का असर बुद्धि के ऊपर पड़ता है। धीरे-धीरे यह प्रक्रिया- प्रार्थना करने, ध्यान लगाने, भजन करने की खत्म होती चली गई। इस समय अगर लोग ध्यान लगाते भी हैं तो किसका? रुपया-पैसा मिलना चाहिए, आदमी औरत का, औरत आदमी का, लड़का लगता है कि कोई अच्छी लड़की औरत मिल जाए। ध्यान दुनिया और दुनिया की चीजों की तरफ हो गया। दुविधा में दोनों गई- माया मिली न राम। जब लोगों ने असली चीज को छोड़ दिया, प्रभु का, देवी-देवताओं का ध्यान लगाना छोड़ दिया तब न इधर कामयाबी मिल रही, न उधर कामयाबी मिल रही और अधर में लटके हुए हैं।मालूम ही नहीं हो पता है कि सुख-शांति कैसे मिलती है। मुख्य कारण यही है कि यह मांसाहार और शराब बढ़ता चला जा रहा है। जिम्मेदार लोग भी ध्यान नहीं देते हैं। जिनको छुड़वाना चाहिए, वे भी नशे की आदत में फंसे हुए हैं। देश को चलाने वाले कौन होते हैं? पीएम, सीएम, ?ीएम (डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट)। और समाज को ऋषि मुनि महात्मा सन्त चलाते हैं। ये लोगों को गाइड करते, रास्ता दिखाते हैं, बताते हैं की भाई इस तरह से चलो।

जन सुनवाई में उपस्थित न होने पर होगी कार्यवाही

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा है कि आमजनता की समस्याओं के निराकरण तथा आवेदनों पर सुनवाई के लिए हर मंगलवार कलेक्ट्रेट में प्रातः 11 बजे से जन सुनवाई का आयोजन किया जाता है। जन सुनवाई में कई कार्यालय प्रमुख स्वयं उपस्थित न होकर अपने प्रतिनिधियों को भेज रहे हैं। ऐसी स्थिति सहन नहीं की जाएगी। सभी संबंधित कार्यालय प्रमुख जन सुनवाई में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें। कलेक्टर कार्यालय की लिखित अनुमति के बिना मुख्यालय छोड़ने तथा अवकाश पर जाने पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। जन सुनवाई में यदि कार्यालय प्रमुख अनुपस्थित रहते हैं तो उसे व्यक्तिगत लापरवाही मानते हुए अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। सभी संबंधित कार्यालय प्रमुख जन सुनवाई में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर आमजनता के आवेदन पत्रों का निराकरण करें।

कलेक्टर ने 104 आवेदन पत्रों में की सुनवाई

रीवा। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जन सुनवाई में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने आमजनता के 104 आवेदन पत्रों में सुनवाई की। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को सात दिन की समय सीमा में आवेदन पत्रों के निराकरण के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी जन सुनवाई में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर आमजनता के आवेदनों का समुचित निराकरण करें। जन सुनवाई से अनुपस्थित अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी। जन सुनवाई में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी तथा संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय ने भी आमजनता के आवेदनों में सुनवाई की। जन सुनवाई में संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। जन सुनवाई में पुष्पेन्द्र सिंह निवासी बैकुण्ठपुर ने शासकीय जमीन पर अवैध रूप से बनाए जा रहे निर्माण को रोकने तथा निर्मित संरचना को हटाने के लिए आवेदन दिया। कलेक्टर ने तहसीलदार सिरमौर को मौके पर जाकर कार्यवाही के निर्देश दिए। मीराबाई आंगनवाड़ी सहायिका निवासी ग्राम निमगनहा ने चार माह से लंबित मानदेय के भुगतान के लिए आवेदन दिया। कलेक्टर ने जिला कार्यक्रम अधिकारी को सात दिवस में मानदेय के भुगतान के निर्देश दिए। सुशील पटेल निवासी ग्राम कनौजा ने उचित मूल्य दुकान के सेल्समैन द्वारा अंगूठा लगवाने के बाद भी खाद्यान्न न देने की शिकायत की। कलेक्टर ने जिला आपूर्ति अधिकारी को आवेदक को खाद्यान्न प्रदान कराने के निर्देश दिए। जन सुनवाई में मोतीलाल द्विवेदी निवासी पड़रा बस्ती ने शासकीय आम रास्ते से अवैध कब्जा हटवाकर आम रास्ता बहाल कराने के लिए आवेदन दिया। कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को प्रकरण में तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए। महेन्द्र मिश्र निवासी पतौना ने बिजली के बिल में सुधार के लिए आवेदन दिया। कलेक्टर ने अधीक्षण यंत्री विद्युत मण्डल को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। ताहिर मंसूरी निवासी अमहिया ने जमीन के नामांतरण के संबंध में आवेदन दिया। कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। दिव्यांग अरूण कुमार साकेत निवासी देवरी सेंगरान ने मोटराइज्ड तिपहिया साइकिल के लिए आवेदन दिया। कलेक्टर ने संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय को रेडक्रास समिति के माध्यम से आवेदक को मोटराइज्ड तिपहिया साइकिल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। विद्याधर मिश्र निवासी कौआढान ने निराश्रित गौवंश को आसपास संचालित तीन गौशालाओं में रखवाने के लिए आवेदन दिया। कलेक्टर ने एसडीएम हुजूर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। बैठक में उपचार सहायता, अनुकंपा नियुक्ति, पेंशन प्रकरण, आर्थिक सहायता तथा अन्य आवेदनों की सुनवाई की गई।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल की अध्यक्षता में राज्य सुपरवाईजरी बोर्ड की बैठक संपन्न

भोपाल/रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि पी.सी.पी.एन.डी.टी. अधिनियम के प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि जन आवश्यक सेवाओं के सुचारू प्रदाय में असुविधा नहीं होनी चाहिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल की अध्यक्षता में पी.सी.पी.एन.डी.टी. अधिनियम की राज्य सुपरवाईजरी बोर्ड की बैठक मंत्रालय वल्लभ भवन में संपन्न हुई। बैठक में बोर्ड द्वारा गर्भधारण पूर्व एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन प्रतिषेध) पी.सी.पी.एन.डी.टी. अधिनियम 1994 के प्रावधानों के क्रियान्वयन की समीक्षा की गयी और महत्वपूर्ण विषयों में विमर्श उपरांत निर्णय लिए गये।राज्य सुपरवाईजरी बोर्ड ने निर्णय लिया कि डिजिटल फॉर्म-एफ के अपलोड हेतु अधिकतम

5 दिवस का समय दिया जाए। पी.सी.पी.एन.डी.टी. अधिनियम की धारा 5 के अनुसार राज्य स्तर पर भौतिक सहमति पत्र (फिजिकल कंसेंट फॉर्म) का निर्धारण कर समस्त जिला सक्षम प्राधिकारियों को प्रसारित किया जाए ताकि समस्त पंजीकृत केन्द्रों द्वारा उचित संधारण किया जा सके।बोर्ड ने निर्णय लिया कि डिजिटल फॉर्म-एफ के अपलोड हेतु तकनीकी प्रक्रियाओं के सरलीकरण हेतु समुचित प्रयास किए जायें। प्रशिक्षु चिकित्सक (रेडियोलॉजी/स्त्री एवं प्रसूति रोग) द्वारा पंजीकृत सोनोग्राफी मशीन का उपयोग एवं रिपोर्टिंग तथा भ्रूण लिंग चयन संबंधी उपकरणों के तकनीशियन टेक्निशियन/पीईटी स्कैन टेक्निशियन) की योग्यता का स्पष्ट मार्गदर्शन केंद्रीय बोर्ड से प्राप्त किया जाये। बैठक में विधानसभा सदस्य श्रीमती रीति पाठक, श्रीमती प्रियंका मीणा, प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, मिशन संचालक, एन.एच.एम. श्रीमती प्रियंका दास, अतिरिक्त सचिव, विधि एवं विधाई कार्य विभाग श्री भरत कुमार व्यास सहित विभागीय वरिष्ठ अधिकारी तथा तकनीकी विशेषज्ञ शामिल रहे।

रीवा मे कथा सुनाने को लेकर दो पंडितों में जमकर चले लात-घुसे. पंडितों में हुए जमकर विवाद का वीडियो जमकर वायरल

रीवा।दरअसल हनुमान मंदिर चिरहुला के पार्किंग से एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल है वीडियो में 2 पंडित विवाद करते नजर आ रहे है,जानकारी के मुताबिक चिरहुला हनुमान मंदिर के पार्किंग स्थल में दो पंडित टहल रहे थे इसी दौरान कुछ श्रद्धालु मंदिर के पार्किंग स्थल पर पहुंचे और कथा सुनने की इच्छा जाएगी इतने में एक पंडित जी ने श्रद्धालुओं को कथा सुनने की बात कही लेकिन फिर क्या दूसरे पंडित जी पहुंचते हैं और श्रद्धालु से बातचीत करके कुछ कम दाम में कथा सुनने की बात कर ली इतना देख पहले पंडित जी ने दूसरे पंडित पर हमला कर दिया और फिर क्या पार्किंग स्थल पर ही दोनों पंडित के बीच जमकर विवाद हुआ और लात घुसे चल अब वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल है

पीओपी से बन रही थी मूर्तिया अनुविभागीय अधिकारी ने की कार्यवाही 100 बोरी पीओपी हुई जप्त मूर्तिकारों में मचा हड़कंप

रीवा। पीओपी से बनी मूर्तियों से पर्यावरण प्रदूषित होता है।पानी में विसर्जित करने के बाद ये गलती नहीं हैं।इसके कारण पानी भी प्रदूषित होता है और जलीय जीव भी मर जाते है।पीओपी की मूर्ति से होने वाले हानिकारक प्रभावों के कारण हर साल इस पर रोक लगाई जाती है।इस साल भी कलेक्टर द्वारा पीओपी की मूर्तियों के विक्रय पर प्रतिबंध लगाया है। इस आदेश के बावजूद कई क्षेत्रों में पीओपी की मूर्तियां बन रही है जिसमे अनविभागीय अधिकारी डॉक्टर अनुराग तिवारी के निरक्षण के दौरान बंजारी गांव में निर्मित किए जा रहे गणेश व दुर्गा मूर्ति सामग्री का जांच किया गया जिसमें मूर्तियां पीओपी के द्वारा बनाई गई थी जिस पर कार्यवाही करते हुए 100 बोरी पीओपी को जप्त कर पंचनामा कार्रवाई की गई है और कहा गया है कि अगर दोबारा पीओपी का इस्तेमाल किया जाता है तो मूर्तिकार के ऊपर वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

सिंगरौली में अवैध रेत परिवहन कर रहे भाजपा के युवा मोर्चा के पूर्व उपाध्यक्ष ने चढ़ाया ट्रैक्टर, युवक की मौत

सिंगरौली। खेत से ट्रैक्टर निकालने से मना करने की बात पर विवाद इतना बढ़ गया कि दबंगों ने एक ग्रामीण पर ट्रैक्टर चढ़ाकर उसकी जान ले ली। घटना के बाद से आरोपित फरार है। यह घटना सिंगरौली जिले के सरई थानांतर्गत बरका चौकी के ग्राम गन्नई की है। घटना के बाद से क्षेत्र में तनाव देखा जा रहा है। इस मामले में पुलिस ने ट्रैक्टर के मालिक और चालक के विरुद्ध मामला दर्ज किया है, लेकिन किसी की भी गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है। इधर इस मामले को कांग्रेस तूल देने की तैयारी में है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल ने इस मामले में अपने एक्स हैंडल पर सवाल पूछकर सरकार रेत माफिया गांव के किसानों के खेतों से अपने वाहन लेकर गुजरते हैंग्राम गन्नई में पटीर नदी से रेत का अवैध खनन और परिवहन होता है। रेत माफिया गांव के किसानों के खेतों से अपने वाहन लेकर गुजरते हैं। इसी को लेकर गांव के इंद्रपाल अगरिया ने रेत का परिवाहन करने वालों को अपने खेत से ट्रैक्टर लेकर निकलने से मना किया। इसी बात को लेकर रविवार और सोमवार की दरमियानी रात इंद्रपाल का एक ट्रैक्टर चालक से विवाद हुआ।यह विवाद इतना बढ़ा कि ट्रैक्टर चालक ने इंद्रपाल के ऊपर ट्रैक्टर चढ़ाकर उसकी जान ले ली। इसके बाद आरोपित ट्रैक्टर को मौके पर ही छोड़कर फरार हो गया। इस घटना की जानकारी लगते ही क्षेत्र में हड़कंप मच गया। दोपहर बाद तक इस मामले में किसी आरोपित को गिरफ्तारी किए जाने की सूचना नहीं है।पालिटिकल कनेक्शन आया सामने-इस मामले पता चला है कि आरोपित ट्रैक्टर मालिक लाले वैश्य भाजपा का कार्यकर्ता और युवा मोर्चा का पूर्व उपाध्यक्ष भी है। जिले के कुछ भाजपा नेताओं का उसे संरक्षण भी बताया जा रहा है। संभवत- यही वजह है कि पुलिस के अफसर इस मामले में खुलकर कुछ भी बोलने से बच रहे हैं।कांग्रेस के हाथ आया मुद्दा-इस घटना को कांग्रेस बड़ा मुद्दा बनाने की तैयारी में है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा है कि- ॥ डा.मोहन यादव जी, लूट की यह छूट अपराध और अपराधी को संरक्षण दे रही है। गृहमंत्री के रूप में आप चुप हैं। पुलिस-प्रशासन भी माफिया की मदद कर रहा है।॥ इस प्रकार से पूर्व मंत्री और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य कमलेश्वर पटैल ने भी लिखा है कि- म.प्र. में माफिया बेखौफ है, सिंगरौली जिले में नदी को छलनी किया जा रहा है। पुलिस और खनन विभाग मौन है। गन्नई गांव की घटना शासन-प्रशासन आरोपितों को बचाने में लगा है।पटीर नदी से अवैध रेत का परिवहन अक्सर किया करते थे-परिजनों ने बताया कि वह गरीब किसान है उनके खेत से होते हुए दबंगों ने पटीर नदी से अवैध रेत का परिवहन अक्सर किया करते थे। फसलों का नुकसान होने के वजह से अगरिया परिवार दबंग को रेत परिवहन के लिए मना करते थे। विगत रात्रि युक्त मुद्दे पर विवाद इतना बढ़ गया कि दबंगों ने इंद्रपाल के ऊपर ट्रैक्टर चढ़ा दिया और घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई।अभी तक पुलिस नहीं कर सकी है आरोपित की गिरफ्तारी-कांग्रेस वर्किंग कमेटी सदस्य एवं पूर्व मंत्री कमलेश्वर पटेल ने मुख्यमंत्री से न्याय के लिए गुहार लगाई है। आरोपित भाजपा के युवा मोर्चा का पूर्व उपाध्यक्ष है, अभी तक आरोपित गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। घटना सरई थाना के अंतर्गत गन्नई गांव के बरका चौकी का है।

सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीकर उत्पात करने वाले व आम लोगों को परेशान करने बाले 07 आरोपियों को किया गिरफ्तार

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी - कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत आने बाल पार्क, आमजनो के घूमने कि उपलब्ध कराने एवं आमजनो को कोई परेशानी न हो इसके लिए आज दिनांक 03.09.24 को सूचना मिली कि शहर के विभिन्न स्थानों मटका पार्क, श्रीराम टॉकीज के पीछे फतेहपुर रोड, फतेहपुर कलारी के पास एवं नबाब साहब रोड शिवपुरी के पास सूचना मिली कुछ व्यक्ति उत्पात कर रहे है जो तत्काल ही पुलिस टीमों द्वारा दविश दी गई जो मौके से आरोपी 1. संदीप पुत्र रामजीलाल वाल्मीक उम्र 25 साल निवासी लालमाटी शिवपुरी, 2. विक्रम पुत्र रामहेत जाटव उम्र 20 साल निवासी मनियर शिवपुरी 3. पवन पुत्र दौलतराम परिहार उम्र 30 साल निवासी ग्राम बगवासा थाना पोहरी जिल्ला शिवपुरी, 4. बंटी पुत्र मंगालिया परिहार उम्र 20 साल निवासी ग्राम द्विरि थाना पोहरी, 5. विमल पुत्र बाबूलाल शिकलीगर उम्र 20 साल निवासी फतेहपुर शिवपुरी, 6. राजेश पुत्र सुरेश परिहार उम्र 28 साल निवासी फतेहपुर एवं 7. साहिब जाटव पुत्र ख्याली जाटप उम्र 25 साल निवासी मनीखेडा थाना कोलारस जिला शिवपुरी के उत्पात करते मिले जिससे लोगो में भय का बातावरण उत्पन्न हुआ जो उक्त सभी व्यक्तियों को तत्काल ही कमश इस्तक. 119/24, 120/24, 121/24, 122/24,123/24 124/24 एवं 125/24 धारा 170,126/135(3) बीएनएसएस के तहत गिरफ्तार किया गया एवं आरोपीगणों एसडीएम न्यायालय शिवपुरी पेश किया गया।सभी आरोपीगणों व्दारा थाना पर भविष्य में लड़ाई झगडा न करने की बात स्वीकार की एवं भविष्य में अच्छी तरह रहना बताया थाना कोतवाली पुलिस व्दारा सार्वजनिक क्षेत्रो व आमजनो के घूमने वाले स्थल पाकों व मुख्य चौराहो पर लगातार पुलिस बल तैनात किया जाकर असामाजिक तत्वो के विरुध्द कार्यवाही की जा रही है जो निरंतर जारी रहेगी।

कभी दीपिका पादुकोण के लिए खोले थे दरवाजे! अब हैं YRF स्पाई यूनिवर्स का बड़ा हिस्सा

मनोरंजन की चमचमाती दुनिया में खुद की किस्मत को चमकाना इतना आसान नहीं होता है. हालांकि हर साल तमाम लोग एक्टर बनने का सपना लेकर मुंबई आते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए दिनरात मेहनत भी करते हैं. लेकिन सबके हिस्से इंडस्ट्री की शोहरत कहां आती है. हालांकि जिनमें शिद्दत और लगन होती है, वो ये कारनामा करके भी दिखाते हैं. इन दिनों हिंदी सिनेमा की इंडस्ट्री में एक नाम काफी चर्चा में हैं. अपनी पिछली दो-तीन फिल्मों के जरिए ही उन्होंने सबका दिल ही जीत लिया है. काम ऐसा कि लोग उन्हें बॉलीवुड की दूसरी आलिया भट्ट भी कहने लगे हैं. लेकिन ये मोहतरमा दूसरी आलिया नहीं बल्कि पहली शरवरी वाघ बनने आई हैं.

असिस्टेंट डायरेक्टर बनकर की शुरुआत

मुंबई के मराठी परिवार में जन्मी शरवरी वाघ इंडस्ट्री की बड़ी एक्ट्रेस बनने का ख्वाब लेकर फिल्मों में आई हैं. राजनीतिक परिवार से ताल्लुक रखने वाली शरवरी के नाना मनोहर जोशी महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री रह चुके हैं. पिता शैलेश मुंबई के बड़े बिल्डर हैं और मां नम्रता आर्किटेक्ट. शरवरी की एक बहन भी है, जो अपनी मां की तरह आर्किटेक्ट हैं. शरवरी ने इंडस्ट्री में कदम जमाने के लिए पहले ष्ठ यानी असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम करना शुरू किया. दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह स्टारर 'बाजीराव मस्तानी' और 'सोनू के टीटू की स्वीटी' जैसी सुपरहिट फिल्मों के लिए उन्होंने अपनी असिस्टेंट डायरेक्टर की जिम्मेदारी को निभाया.

शरवरी ने कम वक्त में बनाई पहचान

3 फिल्मों में असिस्टेंट डायरेक्टर की कमान संभालने के बाद शरवरी ने खुद एक्टिंग के मैदान में उतरने का फैसला किया. बस फिर क्या था ऑडिशन देने का सिलसिला शुरू हुआ और साल 2021 में उन्हें अपनी पहली फिल्म 'बंटी और बबली 2' मिली. सैफ अली खान और रानी मुखर्जी के साथ उन्होंने स्क्रीन शेयर की. शुरुआत कुछ खास नहीं रही, लेकिन शरवरी को सभी ने नॉटिस कर लिया. इस फिल्म के लिए शरवरी को बेस्ट डेब्यू आईफा अवॉर्ड और बेस्ट फीमेल डेब्यू के लिए फिल्मफेयर अवॉर्ड भी मिला. 'मुंज्या', 'माहराज' और 'वेदा' जैसी फिल्मों से शरवरी ने अपनी अच्छी-खासी पहचान बना ली है.

दीपिका के लिए खोले थे दरवाजे

हाल ही में शरवरी वाघ ने एक किस्सा सभी के साथ शेयर किया था. एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया था कि जब वो 'बाजीराव मस्तानी' के सेट पर एडी का नाम कर रही थीं, तो उनके साथ एक बेहद खास चीज हुई.

शरवरी की मानें तो, 'बाजीराव मस्तानी' के एक गाने की शूटिंग चल रही थी. दीपिका पादुकोण को गाने में बड़े-बड़े दरवाजों के खुलते ही एंट्री करनी थी. इस गाने की शूटिंग के दौरान दो बड़े-बड़े दरवाजों को वक्त पर खोलना था और एक दरवाजे को पकड़े शरवरी खड़ी हुई थीं. उन्हें टाइमिंग का पूरा ध्यान रखना था. उसी बीच दीपिका पादुकोण ने उन्हें बुलाकर उनसे उनका नाम पूछा था. शरवरी ने कहा कि उस दिन मैंने सबको जाकर कहा कि दीपिका मैम ने मुझसे मेरा नाम पूछा.

क्या टाइगर श्रॉफ के करियर पर पड़ रहा Flop फिल्मों का असर? शूटिंग शुरू होने के बाद बंद हो गई ये बड़ी पिक्चर

साल 2014 में रिलीज हुई फिल्म 'हीरोपंती' से अपने बॉलीवुड सफर का आगाज करने वाले टाइगर श्रॉफ अब लोगों के ऊपर अपना जादू नहीं चला पा रहे हैं. पिछले तीन सालों में लगातार उनकी तीन फिल्में फ्लॉप हुई हैं. उनकी इन फ्लॉप फिल्मों में इसी साल रिलीज हुई 'बड़े मियां छोटे मियां' भी शामिल है, जिसमें उनके साथ अक्षय कुमार भी दिखे थे. हालांकि, ये पिक्चर लोगो को एंटरटेन करने में फेल हो गई थी और फ्लॉप हो गई थी. इस बीच अब खबर है कि टाइगर की एक अपकमिंग फिल्म डब्बा बंद हो गई है.टाइगर की जो फिल्म बंद हुई है वो है 'हीरो नंबर. 1', जिसे जगन शक्ति डायरेक्ट कर रहे थे और वाशु भगनानी प्रोड्यूसर थे. वाशु की प्रोडक्शन कंपनी पूजा एंटरटेनमेंट के बैनर तले ही 'बड़े मियां छोटे मियां' बनी थी. बॉलीवुड हंगामा की एक रिपोर्ट में सूत्र के हवाले से बताया गया कि 'हीरो नंबर. 1' की 20 प्रतिशत शूटिंग पूरी हो चुकी थी. बचे हुए हिस्से की शूटिंग अप्रैल में 'बड़े मियां छोटे मियां' की रिलीज के बाद होनी थी. लेकिन इस फिल्म से वाशु की कंपनी पूजा एंटरटेनमेंट को काफी नुकसान उठाना पड़ा और वो अभी कर्ज में हैं. वहीं वो अभी ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि 'हीरो नंबर. 1' पर पैसा लगाएं. इसलिए, इस पिक्चर को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया.इस बारे में अभी किसी भी तरह की ऑफिशियल जानकारी सामने नहीं आई है. बताया जा रहा है कि डायरेक्टर जगन शक्ति ने पहले ही दूसरे प्रोजेक्ट पर काम शुरू कर दिया है.

मुझसे लंबा भी कोई मिल गया...जब अमिताभ बच्चन ने Stree 2 के 'सिरकटा' के लिए मजे

साल 2018 में आई 'स्त्री' में चंदेरी के लोगों को जहां 'स्त्री' से खौफ था, तो वहीं 'स्त्री 2' में 'सिरकटा' ने भी खूब आतंक मचाया है. 'स्त्री' से बदला लेने के लिए लड़कियों को गायब करने के साथ ही लोगों में अपने डर को बनाए रखने में सिरकटा पूरी तरह से कामयाब रहा है. 'स्त्री 2' में सभी लोग 'सिरकटा' से डरे तो काफी हैं, लेकिन बहुत कम लोगों को ये पता है कि इस किरदार को सुनील कुमार ने निभाया है. इससे पहले 'सिरकटा' अमिताभ बच्चन के साथ भी काम कर चुका है, वो कहांज चलिए जानते हैं.

इस साल जून में आई 'कल्कि 2898 एडी' में अमिताभ बच्चन ने काफी कमाल का काम किया है, हालांकि उनके जैसे सुपरस्टार से खराब की उम्मीद की भी नहीं जा सकती. ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही. 'कल्कि 2898 एडी' में साउथ सुपरस्टार प्रभास और दीपिका पादुकोण भी लीड रोल में थे. 'स्त्री 2' में 'सिरकटा' बनने वाले सुनील ने कल्कि में अमिताभ बच्चन के बॉडी डबल के तौर पर काम किया है.

सुनील के साथ क्लिक कराई फोटो

हाल ही में उन्होंने इंडिया टुडे के साथ हुए इंटरव्यू में 'कल्कि 2898 एडी' में अमिताभ बच्चन के साथ काम करने को लेकर अपने एक्सपीरियंस को शेयर किया. बात करते हुए उन्होंने बताया कि वो उस दिन को कभी भी नहीं भूल सकते, जिस दिन अमिताभ बच्चन ने उनके साथ फोटो क्लिक करने को कहा था. वैसे तो सुनील की बात भी सही है कि जिस अमिताभ बच्चन से मिलना या केवल सामने से देखना ही कई लोगों का सपना होता है, लेकिन सोचिए अगर वो खुद आपके साथ फोटो क्लिक कराने की बात कहें, तो उसे भूला भी नहीं जा सकता है.

शूटिंग के पहले दिन का बताया किस्सा

सुनील ने 'कल्कि 2898 एडी' के शूटिंग के दिन को याद करते हुए कहा, सेट पर मेरा पहला दिन था, उस दिन मुझे एक सीन शूट करना था. मैं अपने सीन के लिए हार्नेस के साथ तैयार हो रहा था और मुझसे थोड़ी ही दूरी पर प्रभास सर और अमिताभ सर बैठे हुए थे. कुछ देर बाद जब अमित सर ने मेरी तरफ देखा तो वो अपनी जगह से उठकर मेरे पास आए और कैमरापर्सन से हम दोनों की फोटो क्लिक करने को कहा. उन्होंने हंसते हुए कहा, सभी लोग मुझे लंबु बोलते हैं, आज मुझसे लंबा कोई मिल गया.

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर की वजह से शो में नहीं शामिल होना चाहते A लिस्ट एक्टर्स?

बिग बॉस की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं. कई सेलिब्रिटी को इस शो में शामिल होने के लिए मेकर्स की तरफ से अप्रोच किया गया है और कई सारे सेलिब्रिटी कलर्स टीवी के इस शो में शामिल होने के लिए उत्सुक भी हैं. लेकिन टीवी के 'ए' लिस्ट एक्टर इस शो में शामिल होने के लिए कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं. एक समय था जब श्वेता तिवारी, जूही परमार, शिल्पा शिंदे, हिना खान, दीपिका कक्कड़ जैसे टीवी के बड़े चेहरे इस शो में शामिल होना चाहते थे. लेकिन अब सीरियल की दुनिया के जाने-माने चेहरे बिग बॉस के घर में एंट्री करने के लिए बिलकुल भी उत्सुक नहीं हैं.टीवी9 हिंदी डिजिटल पर हमने आपके साथ शेयर किया था कि शोएब इब्राहिम बिग बॉस 18 के घर में एंट्री करने वाले पहले कंफर्म कंटेस्टेंट बन चुके हैं. लेकिन अब सुनने में आ रहा है कि शोएब ने इस शो में शामिल होने से इनकार कर दिया है. शोएब के साथ-साथ अर्जुन बिजलानी भी बिग बॉस का ऑफर रिजेक्ट कर चुके हैं. सुरभि चांदना, निया शर्मा को तो बरसों से इस शो में शामिल होने का बुलावा चैनल की तरफ से भेजा जा रहा है. लेकिन वे इस शो में शामिल नहीं होना चाहतीं.

सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं सबसे बड़ी वजह

बिग बॉस ओटीटी के सीजन 3 में इस साल एक्टर्स से ज्यादा सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर को शामिल किया गया था. बिग बॉस 18 के लिए भी डॉली चायवाला के साथ कुछ मशहूर इन्फ्लुएंसर को शो का हिस्सा बनने के लिए संपर्क किया गया है. लेकिन इन सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर के साथ स्क्रीन शेयर करने में कुछ एक्टर्स को कोई दिलचस्पी नहीं है. जिस तरह से कुछ सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बिना सोचे समझे एक्टर्स की बेइज्जती करते हैं, उनसे जिस बदतमीजी से बात करते हैं. उनका ये बर्ताव कई एक्टर्स को पसंद नहीं आ रहा है.

एक्टर्स को नहीं पसंद है बदतमीजी

नाम का खुलासा न करने की शर्त पर एक मशहूर एक्टर ने हमें बताया कि हमें भी सोशल मीडिया पर जो कंटेंट क्रिएट करते हैं, उनसे बातें करना, मिलना अच्छा लगता है. लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि कोई हमें जो चाहे बोले. जिस तरह से रणवीर शौरी जैसे सीनियर एक्टर से शिवानी कुमारी या लवकेश पेश आ रहे थे. वो बहुत ही इंसल्टिंग था.

टकसारी परिवार ने परेड जैन मंदिर में कराया श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का आयोजन

अम्बाह-- श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में टकसारी परिवार व्दारा विश्व शांति जन कल्याण की कामना के लिए श्री शांतिनाथ महामंडल विधान का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में मौजूद श्रद्धालुओं द्वारा पूजा अर्चना कर भगवान से विश्व शांति जन कल्याण की कामना की गई विधान का विश्वशांति महायज्ञ एवं हवन के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर हुए हवन में श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चार के साथ आहुतियां दी एवं संपूर्ण विश्व में शांति की कामना की।

प्रातः काल में मंदिर में मूल नायक भगवान श्री पार्श्वनाथ का अभिषेक कर पंडित मुकेश शास्त्री के सानिध्य में विधान प्रारंभ किया गया श्री शांतिनाथ महामंडल विधान में श्रद्धालुओं द्वारा विशेष अर्घ्यो के द्वारा श्री शांतिनाथ भगवान के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर विशेष आराधना की गई। आयोजक अमित जैन टकसारी ने बताया कि शांतिनाथ भगवान की आराधना करने से सातिशय पुण्य की प्राप्ति होती है। इस संबंध में पुराणों में वर्णन आता है कि रामायण काल में भगवान मुनिसुव्रत नाथ के शासनकाल में मथुरा नगर में महामारी का प्रकोप हुआ था। हजारों की संख्या में प्रजाजन हताहत होने लगे उसी समय वहां पर एक अवध ज्ञानी मुनिराज का आगमन हुआ मथुरा नगर के राजा ने मुनिराज के दर्शन कर उनसे इस महामारी के शमन का उपाय पूछा तब उन्होंने श्री शांतिनाथ भगवान की पूजा अर्चना करने का उपदेश दिय था। तब इस अनुष्ठान के करने से महामारी का शमन हो गया। तभी से जैन परंपरा में यह आयोजन करने का क्रम निरंतर चल रहा है। शहर में हुए इस विधान में ब?ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

वैश्य महासम्मेलन ने डीआईजी अमित सांघी का किया अभिनंदन

वैश्य महा सम्मेलन मध्य प्रदेश की मुख्य इकाई, महिला ईकाई और युवा इकाई की ओर से हुआ कार्यक्रम

ग्वालियर।वैश्य महा सम्मेलन मध्य प्रदेश की मुख्य इकाई, महिला ईकाई और युवा इकाई ओर से आज मंगलवार को DIG कार्यालय SAF ग्राउंड कंपू पर ग्वालियर में डीआईजी बनकर आए आईपीएस श्री अमित सांघी का भव्य अभिनंदन समारोह के साथ वैश्य महासम्मेलन संस्था के पदाधिकारियों से परिचय कराया गया।जिला मीडिया प्रभारी सचिन जैन ने बताया कि वैश्य महासम्मेलन के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश अग्रवाल के नेतृत्व में प्रदेश महामंत्री अनिल जैन, संभागीय अध्यक्ष महेश गर्ग, जिला प्रभारी अनूप गुप्ता, जिला अध्यक्ष राजेश जैन और अन्य पदाधिकारियों ने वैश्य समाज के गौरव आदरणीय आईपीएस अमित जी सांघी को ग्वालियर DIG बनाए जाने पर उनका फूल मालाओं और अभिनंदन किया गया। वही संस्था के प्रतिनिधियों का बारी बारी से परिचय करवाया गया।इस मौके पर डीआईजी अमित सांघी ने कहा वैश्य महा सम्मेलन संगठन समाज और सामाजिक के हर कार्यों में हमेशा आगे आकर सेवा प्रदान करता है। संगठन समाज में सेवा, समर्पण और विश्वास के साथ एकजुट ही सबसे बड़ी ताकत है । इस मौके पर प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश अग्रवाल ने कहा कि प्रशासनिक और सामाजिक सेवा में हमारा वैश्य संगठन साथ रहेगा और वैश्य संगठन किसी कार्यों में पीछे नहीं रहता है। आभार जिला प्रभारी अनूप गुप्ता ने किया।इस दौरान संगठन के प्रभारी अनूप अग्रवाल, जिलाध्यक्ष मुख्य इकाई ग्रामीण रवि सोनी, प्रभारी दिनेश गुप्ता, जिल मंत्री रवि जैन, जिलाध्यक्ष महिला ईकाई ज्योति बंसल, जिलाध्यक्ष युवा ईकाई विवेक गुप्ता, रजनीश नीखरा, चंचल अग्रवाल, श्वेता नीखरा, शैलेंद्र जैन, रिंकू चऊदा, सतीष बंसल, राजीव शिवहरे, वंदना पहाड़िया, अनिता गुप्ता, अल्पना गुप्ता सहित अन्य सदस्य मौजूद थे।

श्रीमद्भागवत कथा के लिए पं, शास्त्री जी को श्रीफल भेंट कर आमंत्रित किया - माहौर*

ग्वालियर-/- अखिल भारत हिन्दू महासभा के संरक्षण में माता व हनुमान मन्दिर, जलाल खां की गोठ में 9 सितंबर को आयोजित होने वाली श्रीमद्भागवत कथा के लिए सुप्रसिद्ध भागवत आचार्य पंडित श्री कृष्ण कुमार शास्त्री जी महाराज को कथा आयोजक किशोर माहौर के मुख्य आतिथ्य में समिति सदस्य गोविंद कुशवाह, भगवान स्वरूप माहौर, बंटी कुशवाह, डॉ होतम फरैजिया, नारायण करोसिया, भाजपा नेता राजकुमार माहौर, हरीशचंद्र वंशकार ने अंगवस्त्र पहना श्रीफल देकर कथा व्यास के लिए आमंत्रित किया। इस मौके पर 9 सितंबर को निकलने वाली भव्य कलश यात्रा राम मन्दिर, फालका बाजार से सुबह 11ः30 बजे से हिन्दू महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जोशी के मुख्य आतिथ्य में प्रारंभ होकर मुख्य मार्गों से होते हुए कथा स्थल पहुंचेगी। इस अवसर पर प्रदेश संगठन मंत्री लालजी शर्मा, संभागीय अध्यक्ष पवन गुप्ता, संभागीय महामंत्री मनोज जाटव, संभागीय संगठन मंत्री मुकेश बघेल, प्रखंड उपाध्यक्ष नीरज साहू, जिला मंत्री सचिन झा, धर्मवीर राठौर, युवक हिन्दू महासभा के जिला संयोजक पवन माहौर, अखिल सक्सेना, आकाश पाल, रिंकू कुशवाह, अनूप राणा, अनुराग श्रीवास्तव मुख्य रूप से मौजूद रहेंगे।

दिव्यांगजनों को रोजगार मूलक गतिविधियों से जोड़ने विशेष प्रयास होंगे - मंत्री नारायण सिंह कुशवाह

ग्वालियर सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्यान मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा है कि दिव्यांग जनों को रोजगार से जोड़ा जाएगा। सभी जिला कलेक्टर को जिला कार्यालयों में कैंटीन, फोटोकॉपियर टाइपिंग सेंटर जैसी रोजगार गतिविधियों में दिव्यांगजन को प्राथमिकता दिए जाने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि यह गतिविधियां दिव्यांगजनों को समूह के रूप में भी प्रदान की जा सकती हैं। साथ ही बैंकों के माध्यम से रोजगार के लिए ऋण भी उपलब्ध कराए जाएंगे। मंत्री कुशवाह ने कहा कि राज्य शासन विकलांगों के पुनर्वास कार्यक्रम को प्राथमिकता के साथ कर रहा है।मंत्री कुशवाह ने कहा कि राज्य सरकार दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम चला रही है। इसमें आरक्षण और रोजगार मेला दिव्यांगजनों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण का प्रावधान है। साथ ही रोजगार मेलों का आयोजन किया जाता है, जहां उन्हें निजी क्षेत्र की नौकरियों में भी अवसर मिलते हैं। दिव्यांगजनों को सक्षम बनाने के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिससे वे आत्म-निर्भर बन सकें। इनमें विभिन्न प्रकार के तकनीकी और गैर-तकनीकी प्रशिक्षण शामिल हैं।मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि जिन दिव्यांग भाइयों की आर्थिक स्थिति कमजोर है, उनके लिये राज्य सरकार द्वारा वित्तीय सहायता और ऋण योजनाएं शुरू की गई हैं, जिससे वे अपना व्यवसाय शुरू कर सकें। समावेशी शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान राज्य में समावेशी शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए विशेष संस्थान भी स्थापित किए जा रहे हैं जो दिव्यांगजनों को शिक्षा और प्रशिक्षण में मदद करते हैं। इन सभी कदमों का उद्देश्य दिव्यांगजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। सरकार निरंतर इन क्षेत्रों में सुधार लाने के लिए काम कर रही है और दिव्यांगजनों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

बिजली चोरी के प्रकरणों का निराकरण समय-सीमा में करें : ऊर्जा मंत्री प्रदुम्न सिंह तोमर

ग्वालियर बिजली चोरी के प्रकरणों का निराकरण समय-सीमा में करें। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह निर्देश मंगलवार को मंत्रालय में विभागीय योजनाओं की समीक्षा में दिये। उन्होंने कहा कि बिजली बिलों की वसूली तत्परता से करें। साथ ही उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण बिजली आपूर्ति भी सुनिश्चित करें। समय पर मेंटनेन्स हो। तोमर ने कहा कि बिजली उपभोक्ताओं का ई-केवायसी करवायें।ऊर्जा मंत्री तोमर ने पावर प्लांटों की समीक्षा करते हुए कहा कि हायडल पॉवर प्रोजेक्ट से उत्पादित बिजली का अधिकतम उपयोग किया जाये। उन्होंने म.प्र. ट्रांसको, जनरेशन कंपनी एवं विद्युत वितरण कंपनियों के कार्यों की भी योजनावार समीक्षा कर जरूरी निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि एक परिवार का एक ही मीटर घर में होना चाहिए।अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव ने बताया कि ट्रांसको ने नई ईएचवी लाइनों पर लगभग 4000 कि.मी. 24 फाइबर नेटवर्क स्थापित किया है। सब स्टेशनों को दूर से संचालित किया जा रहा है। सुरक्षा कर्मियों के अलावा वहाँ पर कोई भी ऑपरेटिंग स्टॉफ तैनात नहीं है। उन्होंने कहा कि कृषि पंपों का वेरीफिकेशन करवाया जा रहा है।इस दौरान ओएसडी श्री विजय गौर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

नगर भ्रमण पर निकले बाबा धारनाथ....पुलिस बैंड ने दी प्रस्तुति, गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया.....

धार की जनता का हाल जानने के लिए भगवान धारनाथ भ्रमण पर निकले। शुरुआत मंदिर परिसर से हुई, इसके पहले पूजा-अर्चना का दौर शुरू हुआ। सबसे पहले मंदिर से भगवान का मुखौटा पुजारियों द्वारा पालकी में विराजित करते हुए पूजन किया गया। भक्त मंडल द्वारा विधि-विधान से पूजा की गई।इसके बाद कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, एसपी मनोज कुमार सिंह, विधायक नीना वर्मा सहित जनप्रतिनिधियों ने महाआरती की। भगवान धारनाथ को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया व जयघोष के साथ पालकी आगे बड़ी। पूजन के दौरान बड़ी संख्या में लोग दर्शन के लिए पहुंचे। पालकी के आगे-आगे श्रद्धालुओं की हाथ में झाड़ू लिए सड़कों को बुहारते हुए चल रहे थे। छबीना निकलने के पहले शहर में रिमझिम बारिश भी हुई।इस पूरे चल समारोह का जिम्मा 6 डीएसपी, 12 टीआई और 250 पुलिसकर्मियों ने संभाला। 5 मोबाइल टीम और 10 बाइक टीम भी तैनात रहीं।

बैंड ने दी प्रस्तुति-दरअसल, स्टेट टाइम यानी राजवंश काल में धार महाराज आनंदराव पंवार के शासनकाल से छबीने की शुरुआत हुई थी। वहीं श्री धर्मस्थान रक्षक मंडल समिति द्वारा सालों से छबीना निकाला जा रहा है। स्टेट काल में छबीने का स्वरूप अलग रहता था। इसमें बैलगाड़ी में छबीना निकाला जाता था। वहीं 1994 के बाद छबीने ने विराट स्वरूप लिया।बड़ी संख्या में लोग शामिल होने लगे साथ ही आकर्षक विद्युत सज्जा की झांकियां व अखाड़े निकलना शुरू हुए, जो आज भव्यता की ओर है। इस साल सबसे आकर्षण का केंद्र पुलिस बैंड रहा, बैंड ने मंदिर परिसर में सुंदर प्रस्तुति दी। पहली बार महाकाल की तर्ज पर बैंड छबीने में शामिल हुआ। यह बैंड बाबा के छबीने के साथ कुछ दूरी तक चला, इसके बाद पालकी आगे बड़ गई।

बीजेपी सदस्यता अभियान के सहप्रभारी बने आलोक आहूजा

ग्वालियर। भारतीय जनता पार्टी ने सदस्यता अभियान के लिए पदाधिकारी की नियुक्ति की है।यह नियुक्ति प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा जी, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा जी की सहमति से की गई हैं जिसमे सहकारिता प्रकोष्ठ में सदस्यता अभियान संभाग प्रभारी एवं सहप्रभारी बनाए गए हैं इसी कार्यक्रम में युवा नेता आलोक आहूजा को ग्वालियर संभाग का सदस्यता अभियान सहप्रभारी बनाया गया है श्री आहूजा ने अपनी नियुक्ति पर सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया है

जमीनी रंजिश के चलते परिवार के ही पांच युवकों ने मिलकर तलवार एवं धारदार हथियारों से किये कई वार और युवक को उतारा मौत के घाट

परिवारजनों ने शव को उज्जैन झालावाड़ नेशनल हाइवे पर रख कर डेढ़ घंटे तक किया चक्काजाम परिवारजनों की मांग पांचों आरोपियों के तोड़े जाते मकान

हत्या इतनी भयानक की आरोपियों ने युवक का हाथ उंगलियां अलग अलग काट कर दी शरीर से अलग

घट्टिया - उज्जैन जिले के घट्टिया थाना क्षेत्र के गाँव डाबरी में ओटले पर बैठे राजाराम धानक पर परिवार के ही बबलू पिता कालू,प्रहलाद पिता गणपत,मुकेश पिता रामचंद्र,मोहन पिता गणपत,गणपत पिता रामचंद्र पांचों लोगों ने मिलकर तलवार एवं धारदार हथियारों से राजाराम धानक नामक युवक पर कई वार कर दिए वार इतने भयानक थे की युवक का हाथ शरीर से अलग हो गया वही उंगलियां काट दी गई गर्दन व शरीर पर कई जगह घाव लगे

वारदात के बाद पांचों आरोपी फरार हो गए।पुलिस थाना प्रभारी रामसिंह भामोर अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे व आरोपियों की धड़पकड़ शुरू की उसमें 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया और 1 आरोपी फरार है।बताया गया की पुराने जमीनी विवाद को लेकर विवाद चल रहा था इसी को लेकर आरोपियों ने वारदात

को अंजाम दिया गया।मृतक का बड़ा पुत्र पिता का शव अपनी ही गाड़ी में लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घट्टिया पंहुचा।हॉस्पिटल में जाँच करने के बाद डॉक्टर वैशाली बामनिया ने राजाराम धानक को मृत घोषित कर दिया। शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला चिकित्सालय भेजा गया।थाना घट्टिया पुलिस ने मर्ग कायम कर जाँच में लिया और 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर और 1 आरोपी की तलाश में जुटी।हत्या के दूसरे दिन मृतक के पोस्टमार्टम के बाद परिवारजनों ने शव को घट्टिया में उज्जैन झालावाड़ नेशनल हाइवेपर रखकर चक्काजाम कर दिया।चक्काजाम डेढ़ घंटे तक चला।परिवारजनों की मांग थी कि पांचों आरोपियों के मकान तोड़ जावें।प्रशासनिक अधिकारियों के आश्वासन के बाद चक्काजाम खोलकर परिवारजनों ने शव का अंतिम संस्कार किया।एसडीएम राजाराम करजरे ने तहसीलदार प्रकाश परिहार को निर्देशित किया की आरोपियों के मकानों को चिन्हित कर जांच की जाए।तहसीलदार प्रकाश परिहार ने पटवारी को तत्काल मौके पर भेज कर आरोपियों के मकानों को चिन्हित कर जांच करवाई जिसमें आरोपियों के मकान शासकीय भूमि पर पाए गए।तहसीलदार ने विधिवत नोटिस जारी कर मकानों के खाली करने के निर्देश दिए।

7 दिवस के अंदर आरोपियों के मकान तोड़े जायेंगे-मौके पर एसडीएम राजाराम करजरे,तहसीलदार प्रकाश परिहार, डीएसपी भारत सिंह यादव,थाना प्रभारी रामसिंह भामोर सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं

एजेंसी
नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में सप्ताहांत पर तीव्र गिरावट के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर सप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 3.12 प्रतिशत की गिरावट लेकर 73.65 डॉलर प्रति बैरल पर और लंदन ब्रेंट क्रूड 1.43 प्रतिशत उतरकर 78.82 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। देश के चार महानगरों में पेट्रोल और डीजल की कीमत इस प्रकार रही।

पहली तिमाही में अनुमान से कमजोर रही आर्थिक वृद्धि

नयी दिल्ली। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में प्राथमिक क्षेत्रों विशेषकर कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियों के साथ ही वित्तीय, रियल एस्टेट और पेशेवर गतिविधियों में रही सुस्ती के कारण आर्थिक वृद्धि अनुमान से कम 6.7 प्रतिशत रही है, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 8.2 प्रतिशत रही थी। विशेषज्ञों ने पहली तिमाही में इसके सात प्रतिशत से अधिक रहने का अनुमान लगाया था। राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी आंकड़ों के अप्रैल-जून 2024-25 में वास्तविक जीडीपी या स्थिर मूल्यों पर जीडीपी 43.64 लाख करोड़ रुपए होने का अनुमान है, जबकि 2023-24 की पहली तिमाही में यह 40.91 लाख करोड़ थी, जो 6.7 प्रतिशत की वृद्धि है। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में वर्तमान मूल्यों पर जीडीपी 77.31 लाख करोड़ होने का अनुमान है, जबकि 2023-24 की पहली तिमाही में यह 70.50 लाख करोड़ रुपए थी, जो 9.7 प्रतिशत अधिक है।

कॉमर्शियल गैस सिलेंडर 39 रुपये तक महंगा, नई दरें लागू

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों (ओएमसी) ने कॉमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत में 39 रुपये प्रति सिलेंडर का इजाफा किया है। हालांकि, घरेलू रसोई गैस सिलेंडर के दाम में कोई बदलाव नहीं किया गया है। नई दरें रविवार से लागू हो गई हैं। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में 19 किलोग्राम वाले कॉमर्शियल गैस की कीमत 39 रुपये बढ़कर अब 1691.50 रुपये प्रति सिलेंडर हो गयी है, जो पहले 1652.50 रुपये में मिल रहा था। वहीं, कोलकाता में इसका दाम बढ़ कर 1802.50 रुपये हो गया है, जो पहले 1764.50 रुपये था। इसी तरह मुंबई में कॉमर्शियल गैस की कीमत बढ़ कर 1605 रुपये से 1644 रुपये हो गयी है। इसके अलावा चेन्नई में ये सिलेंडर 1855 रुपये का मिल रहा है। हालांकि, 14.2 किलोग्राम वाले घरेलू रसोई गैस सिलेंडर के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में यह 803 रुपये और मुंबई में 802.50 रुपये का मिल रहा है।

कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स घटाकर 1,850 रुपये प्रति टन किया, नई दरें लागू

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने अंतरराष्ट्रीय बजार में क्रूड ऑयल की कीमतों में उतार-चढ़ाव के बीच घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर अप्रत्याशित लाभ कर (विंडफॉल टैक्स) को घटा दिया है। सरकार ने विंडफॉल टैक्स को 2,100 रुपये प्रति टन से घटाकर 1,850 रुपये प्रति टन कर दिया है। नई दरें शनिवार से प्रभावी हो गई हैं। सरकार की ओर से जारी अधिसूचना में कहा गया है कि घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स को 2,100 रुपये प्रति टन से घटाकर 1,850 रुपये प्रति टन कर दिया गया है। नई दरें 31 अगस्त, 2024 से प्रभावी होंगी। हालांकि, पेट्रोल, डीजल और एविएशन टरबाइन फ्यूल (एटीएफ) पर लगने वाले दर को फिर शून्य पर बरकरार रखा गया है। इससे पहले सरकार ने 16 अगस्त, 2024 घरेल स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स को 54.3 फीसदी घटाकर 4,600 रुपये से 2,100 रुपये प्रति टन कर दिया गया था, जबकि डीजल और एटीएफ पर लगने वाले टैक्स को शून्य पर अपरिवर्तित रखा था। इस तरह से सरकार ने अगस्त महीने में दो बार में करीब 60 फीसदी तक विंडफॉल टैक्स में कटौती की है।

भारत में सीसा विषाक्तता पर पहली अंतर्राष्ट्रीय बैठक

एजेंसी
नयी दिल्ली ।पहले इंडिया फाउंडेशन ने भारत में सीसा विषाक्तताः स्थिति, चुनौतियों और मार्ग पर पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया है जिसमें विशेषज्ञों ने देश में विभिन्न स्तरों पर सीसा के स्तरों में हो रही वृद्धि पर गहरी चिंता जतायी है।

इस सम्मेलन में केक स्कूल ऑफ मेडिसिन, विश्वविद्यालय कैलिफोर्निया के प्रोफेसर डॉ. हॉवर्ड हू , एम्स दिल्ली के निदेशक डॉ एम श्रीनिवास, आईसीएमआर-एनआईओएच के निदेशक डॉ संतसबुज दास शामिल है। पहले इंडिया के अध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार ने इसकी अध्यक्षता की। इस सम्मेलन में प्रभावी समाधान निकालने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया गया। सीसा विषाक्तता पर भारत कार्य समूह के अध्यक्ष और प्रतिष्ठित अध्येता पहले इंडिया फाउंडेशन डॉ इंदु भूषण ने कहा, क्योंकि सीसा की सीमा एक्सपोजर अदृश्य है, हमारे देश में इसे काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया गया है।

एक हालिया सर्वेक्षण में हम झारखंड में किए गए सर्वेक्षण से एक चिंताजनक वास्तविकता सामने आई। हमारे डॉक्टरों और स्वास्थ्य का एक बड़ा हिस्सा श्रमिकों को सीसा विषाक्तता के मामले की जानकारी तक नहीं है।

शक्कर में मांग, खाद्य तेलों में मजबूती, दलहन, दाल में सुधार, चावल सामान्य

इंदौर। सियागंज किराना बाजार में शक्कर में मांग रही। खाद्य तेलों में तेजी दर्ज की गई। आज सोयाबीन रिफाइंड ऊंचा होकर बिका। तिलहनों में मजबूती रही। दलहन मांग से बने रहे। दाल में सुधार बताया गया। चावल बना रहा।

किराना बाजार

सियागंज किराना बाजार में शक्कर में ग्राहकी रही। आज शक्कर में चार गाड़ी आवक हुई। खोपरा गोला में दिसावर के साथ मजबूती रही। साबूदाना, खोपरा बूरा में उठाव रहा।

तेल-तिलहन

खाद्य तेलों में पूछपरख से तेजी हुई। आज सोयाबीन रिफाइंड तथा मूंगफली तेल में तेजी दर्ज की गई। आने वाले दिनों में खाद्य तेलों में मांग बढ़ने के आसार हैं। तिलहनों में सरसों में लिवाली से सुस्ती से नरमी रही।

दाल-दलहन

संयोगितागंज अनाज मंडी में दलहन जिन्सों में दाल मिलों की मांग रही, इसर चना कांटा ही नहीं वरन चने की विभिन्न किस्मों में तेजी हुई। दालें मांग से मजबू रही। तुअर दाल तथा मूंग मोगर महंगी बिकी। चावल में उठाव बना रहा।

एक दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत की वृद्धि हुयीः मोदी

एजेंसी
नयी दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछले एक दशक में देश की अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि इसके मुकाबले में दुनिया की अर्थव्यवस्था 35 फीसदी ही बढ़ी है।

श्री मोदी ने यहां ईटी वर्ल्ड लीडर्स फोरम में भारत की आर्थिक प्रगति, गरीबी उन्मूलन और बुनियादी ढांचे के विकास पर रोशनी डालने के साथ ही पिछले एक दशक में भारत की प्रगति और लोगों के जीवन में आए सकारात्मक बदलावों के बारे में बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 10 सालों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। पिछले एक दशक में भारत ने गरीबी कम करने में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 सालों में भारत की अर्थव्यवस्था में 90 प्रतिशत से ज्यादा का इजाफा हुआ है जो लगातार विकास का नतीजा है जिसका वादा किया गया था। उन्होंने भरोसा दिलाया कि विकास की यह रफ्तार भविष्य में भी जारी रहेगी। ये विकास सिर्फ वादा नहीं, बल्कि एक हकीकत है जो आगे भी बनी रहेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म का मंत्र सरकार के कामकाज का आधार रहा है। इस मंत्र के तहत कई महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। इससे भारतीयों के जीवन में बड़ा बदलाव आया है। उन्होंने कहा हम भारतीयों के जीवन में एक बड़ा बदलाव लाने में कामयाब हुए हैं। इन सुधारों से देश में जीवन स्तर बेहतर हुआ है और प्रगति को गति मिली है।प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक दशक में देश की उपलब्धियों को देखते हुए भारतीयों का आत्मविश्वास बढ़ा है। यह आत्मविश्वास भारत के विकास और सुधारों में एक नए विश्वास को दर्शाता है। कई देशों में जहां सरकारों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वहीं भारत की स्थिति अलग है। भारत के युवाओं और महिलाओं ने निरंतरता और राजनीतिक स्थिरता के लिए वोट दिया है, जो चल रही प्रगति और स्थिर सरकार के प्रति उनके समर्थन को दर्शाता है।

श्री मोदी ने कहा कि भारत की उपलब्धियां अब वैश्विक सुर्खियां बन गई हैं। पिछले एक दशक में 25 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी से बाहर निकले हैं जिससे एक नए मध्यम वर्ग का उदय हुआ है। जहां एक तरफ गरीबों के पास अपनी आकांक्षाएं थीं, वहीं दूसरी तरफ उन्हें बैंक खाते और बुनियाद सुविधाओं जैसी चुनौतियों का भ सामना करना पड़ता था। उन्हों सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए कहा, हमने गरीबों क सशक्त बनाने का रास्ता चुना औ इसके चलते काफी बदलाव आय है।

श्री मोदी ने कहा कि 10 दिनों से भी कम समय में सरका ने गरीबों, महिलाओं, युवाओं औ किसानों को लाभान्वित करने वाले महत्वपूर्ण सुधारों को लाग किया है। इन सुधारों में उच्च उपज वाले बीजों को पेश करन और 11 लाख नई 'लखपति दीदी' बनाना शामिल है।

टीच फॉर इंडिया 2025 फैलोशिप

एजेंसी
नई दिल्ली। शिक्षा में समानता की समर्थक गैर लाभकारी संस्था टीच फॉर इंडिया अपने 2025 फैलोशिप के लिए आवेदन आमंत्रित कर रही है। संस्था ने आज यहां जारी बयान में कहा कि फैलो के रूप में बच्चों के भविष्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आएंगे और स्नेहपूर्वक भविष्य के नेतृत्वकर्ताओं का मार्गदर्शन करेंगे। इसके लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि एक सितंबर 2024 है। टीच फॉर इंडिया एक दो वर्षीय, पूर्णकालिक सशुल्क फैलोशिप प्रोग्राम है। इसमें 500 से ज्यादा विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और 300 कंपनियों से विभिन्न पृष्ठभूमि और उम्र के फैलो एक जगह आकर फैलोशिप करते हैं। फैलोशिप की आवेदन प्रक्रिया बहुत कठोर है और इसके लिए भारत के सबसे प्रतिभाशाली एवं होनहार लोगों से आवेदन प्राप्त होते हैं। फैलोशिप के लिए चयन होने के बाद ये फैलो किफायती निजी स्कूलों में या इंग्लिश मीडियम के सरकारी स्कूलों में पूर्णकालिक टीचर्स के रूप में काम करेंगे और भारत में असमानताओं की चुनौतियों के बीच विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। इससे उन्हें नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं, जैसे भावनात्मक कौशल, सहानुभूति, धैर्य से सुनने, और संबंधों के विकास का बहुमूल्य ज्ञान भी प्राप्त होगा। ये सभी कौशल उनके व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। 2024 के फैलोशिप समूह में अभी तक 670 से ज्यादा फैलो शामिल हो चुके हैं। इन सभी का उद्देश्य शिक्षा की मदद से एक उदार और समानतापूर्ण भारत का निर्माण करना है। टीच फॉर इंडिया फैलोशिप की खासियत है कि यह शिक्षा के मौजूदा परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का अवसर प्रदान करती है।

मानक ब्यूरो ने 92 शैक्षणिक संस्थानों के साथ किए समझौते

एजेंसी
नई दिल्ली। भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने अकादमिक शोध को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण की आवश्यकताओं के साथ जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए देश भर के 92 उच्च शैक्षणिक संस्थानों के साथ मजबूत साझेदारी के लिए समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह जानकारी उपभोक्ता कार्य, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की शुक्रवार को जारी एक विज्ञप्ति में दी गयी है। विज्ञप्ति के अनुसार बीएसई ने राष्ट्रीय मानकीकरण प्रक्रिया में शिक्षाविदों को एक महत्वपूर्ण और निष्पक्ष हितधारक के रूप में मान्यता प्रदान की है।

बीआईएस का मानना है कि ये समझौता ज्ञापन शैक्षणिक संस्थानों के लिए राष्ट्रीय मानकों के निर्माण हेतु बीआईएस तकनीकी समितियों में सक्रिय रूप से भाग लेने, बीआईएस द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का संचालन करने और अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण प्रयासों में योगदान देने का मार्ग तैयार करेंगे। बीआईएस ने अकादमिक शोध को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण की आवश्यकताओं के साथ जोड़ने को लेकर उदयपुर (राजस्थान) औ धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में द सम्मेलन आयोजित किए जिसमें देश भर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा औ अनुसंधान में लगे चुनिंदा संस्थानों के विद्वानों को आमंत्रित किया गया था इनमें सिविल इंजीनियरिंग, केमिकल इंजीनियरिंग और रसायन विज्ञान क्षेत्र में मानकीकरण के तकनीकी पहलुओं पर महत्वपूर्ण जानकारी का आदान प्रदान किया गया। बीएसएस के प्रयास भारत में उत्पादों के गुणवत्ता मानकों को विश्व में अग्रणी स्तर प रखना है।

सर्राफा बाजार में गिरावट से सस्ता हुआ सोना, चांदी की भी फीकी पड़ी चमक

एजेंसी
नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज लगातार दूसरे दिन मामूली गिरावट नजर आ रही है। आज की गिरावट की वजह से देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 73,290 रुपये से लेकर 73,140 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी आज 67,190 रुपये से लेकर 67,040 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी भी आज 500 रुपये प्रति किलोग्राम तक सस्ता हुआ है। भाव में गिरावट आने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में ये चमकीली धातु आज 87,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 73,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 67,190 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 73,140 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 67,040 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 73,190 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 67,090 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 73,140 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 67,040 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 73,140 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 67,040 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर आ गया है।

चालू वित्त वर्ष में जीडीपी वृद्धि दर 7.0 प्रतिशत रहने का अनुमान : एसबीआई

जेंसी
नई दिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने अप्रैल -जून की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर के अनुमान से कम 6.7 प्रतिशत रहने के मद्देनजर चालू वित्त में जीडीपी विकास दर 7.0 प्रतिशत रहने की संभावना जतायी है।

एसबीआई के ग्रुप मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ सौम्य कांति घोष ने जारी अपनी एक रिपोर्ट में कहा भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने वित्त वर्ष 25 के लिए जीडीपी वृद्धि का अनुमान 7.1 प्रतिशत की पहली तिमाही की वृद्धि के आधार पर 7.2प्रतिशत लगाया है। अब पहली तिमाही में 6.7प्रतिशत की वृद्धि के साथ, नया वार्षिक अनुमान 7.1प्रतिशत होगा। हमारा मानना है कि वित्त वर्ष 2025 के लिए जीडीपी वृद्धि आरबीआई के अनुमान से थोड़ी कम होगी और 7.0प्रतिशत की वृद्धि अधिक उचित लगती है। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में भारत की अर्थव्यवस्था में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पिछली चार तिमाहियों में अर्थव्यवस्था में 7 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई और कृषि तथा सेवा दोनों क्षेत्रों में कम वृद्धि के कारण पहली तिमाही का प्रदर्शन उससे कम रहा। कृषि में जहाँ मात्र 2.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं सेवा क्षेत्रों में 7.2प्रतिशत की वृद्धि हुई। हालाँकि नॉमिनल जीडीपी में पहली तिमाही में 8.5प्रतिशत वृद्धि से अधिक है। हालाँकि जीडीपी तिमाही में जीडीपी वृद्धि घटकर 6.7 प्रतिशत हो गई है, लेकिन यह अभी भी पहली तिमाही में 6.4प्रतिशत की औसत दशकीय वृद्धि से अधिक है।

डॉ घोष ने कहा जीवीए में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई और पिछली तीन तिमाहियों में 122 आधार अंक के औसत अंतर की तुलना में चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी और जीवीए के बीच का अंतर घटकर मात्र 19 आधार अंक रह गया। हमारा मानना ??है कि यह जीडीपी-जीवीए अंतर पिछले वित्त वर्ष में 93 आधार अंक के अंतर के मुक़ाबले चालू वित्त वर्ष में संभवतः एक हो जाएगा। उन्होंने कहा कि तिमाही-दर-तिमाही के लिहाज से, वास्तविक जीडीपी हमेशा पहली तिमाही में कम रहती है। मौसमी रूप से समायोजित जीडीपी वृद्धि हमेशा पहली तिमाही के लिए गैर-मौसमी रूप से समायोजित जीडीपी वृद्धि से अधिक होती है, जो दर्शाता है कि पहली तिमाही की वृद्धि गैर-मौसमी रूप से समायोजित आंकड़े से बेहतर है और इसमें मौसमी घटक अधिक है। उन्होंने कहा कि व्यय पक्ष या सामान्य मांग काफी हद तक सकारात्मक तस्वीर दिखाती है, जिसमें मूल्यवान वस्तुओं को छोड़कर सभी मदों में चालू वित्त की पहली तिमाही में सकारात्मक वृद्धि दिखाई देती है। निजी खपत में मौजूदा कीमतों में 12.4प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई। लेकिन निवेश दर 31प्रतिशत पर स्थिर रही। सरकारी व्यय में 4.1प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो धीमी थी, लेकिन यह ध्यान में रखते हुए कि पहली तिमाही आम चुनावों की अवधि भी थी।

डॉ घोष ने कहा कि जून में सुस्त प्रदर्शन के बाद चल रहे मानसून सीजन में पिछले दो महीनों में लगातार भारी बारिश देखी गई है। जुलाई-अगस्त 2024 की अवधि पिछले 30 वर्षों में देश में सबसे अधिक बारिश वाली जुलाई-अगस्त अवधि में से एक होने जा रही है। जुलाई-अगस्त 2024 के दौरान दर्ज की गई वर्षा वर्तमान में 595 मिमी है, जो एलपीए से लगभग 12.5प्रतिशत ??अधिक है। हालाँकि, दूसरा पहलू यह है कि दक्षिणी और मध्य भारत में मानसून असामान्य रूप से भारी रहा है (सामान्य से 17-18प्रतिशत अधिक), लेकिन पूर्व और उत्तर पूर्व में कम (12प्रतिशत) और उत्तर-पश्चिम भारत में लगभग बराबर (3प्रतिशत) रहा है। सामान्य मानसून आने वाले महीनों में खरीफ फसल की बुवाई और मिट्टी की नमी बनाए रखने के लिए अच्छा संकेत है। इसके बाद खाद्य सीपीआई पर नीचे की ओर प्रभाव पड़ेगा। हाल के वर्षों में मजबूत रहने के बाद बैंक ऋण वृद्धि में नरमी आती दिख रही है। वित्त वर्ष 25 में ऋण वृद्धि 12-13प्रतिशत की सीमा में बढ़ सकती है और जमा

आईओसी के चेयमैन वैद्य ने कार्यकाल खत्म होने पर अपना पद छोड़ा

एजेंसी
नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसी) के चेयरमैन एस. एम. वैद्य ने अपना कार्यकाल पूरा होने के उपरांत अपना पद छोड़ दिया है। श्रीकांत माधव वैद्य पेट्रोलियम उद्योग में विगत 37 वर्षों से ज्यादा की विशेषज्ञता के साथ वैश्विक ऊर्जा टेक्नोक्रेट के रूप में प्रतिष्ठित हैं। कंपनी ने जारी एक बयान में बताया कि इंडियन ऑयल के चेयरमैन एस. एम. वैद्य पिछले 37 साल से ज्यादा के अनुभव वाले एक रसायन इंजीनियर हैं। वैद्य आईओसी को अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण शक्ति रहे हैं। आईओसी के मुताबिक वैद्य ने जुलाई, 2020 में कंपनी की बागडोर संभाली थी, उनके कार्यकाल में कंपनी ने असाधारण वृद्धि दर्ज की है। कंपनी ने कहा कि हार्दिक आभार के साथ इंडियन ऑयल की टीम उन्हें एक सफल दूसरी पारी की शुभकामनाएं देती है।

आईओसी ने कहा कि उनके नेतृत्व में कंपनी का शुद्ध लाभ वित्त वर्ष 2019-20 में 1,313 करोड़ रुपये से बढ़कर बीते वित्त वर्ष 2023-24 में 39,619 करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान कंपनी का परिचालन आय 5,66,354 करोड़ रुपये से 53 फीसदी बढ़कर 8,66,345 करोड़ रुपये हो गई। इसके साथ ही आईओसी का बाजार पूंजीकरण भी रिकॉर्ड तीन गुना 33.8 अरब डॉलर का हो गया। आईओस ने कहा कि एक दूरदर्शी व्यक्ति वे रूप में उन्होंने ग्रीन हाइड्रोजन, जै ईंधन और संधारणीय ऊर्जा में अग्रण पहलों के साथ कंपनी के ऊज भविष्य के लिए एक मजबूत खाक तैयार किया है, जिसने इंडियन ऑयल को भारत के हरित परिवर्तन उत्प्रेरक के रूप में स्थापित किया है %राष्ट्र पहले% की भावना क शामिल करते हुए, और व्यावसायि पहलों से परे वैद्य का विजन इंडिय ऑयल को 2047 तक %एव ट्रिलियन डॉलर की दिग्गज कंपनी% बनाना है।

एफएंडओ सेगमेंट के लिए सेबी ने लागू किया नया नियम, 23 स्टॉक्स पर गिर सकती है गाज

एजेंसी
नई दिल्ली । मार्केट रेगुलेटर सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस (एफएंडओ) सेगमेंट के लिए नया एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया लागू कर दिया है। आशंका जताई जा रही है कि इस एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया के कारण आने वाले दिनों में 23 स्टॉक्स फ्यूचर-ऑप्शंस सेगमेंट से बाहर हो सकते हैं और इनका एफएंडओ कॉन्ट्रैक्ट बंद हो सकता है। सेबी द्वारा लागू किए गए नए नियमों के अनुसार फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस सेगमेंट के जो स्टॉक उन्हें इस सेगमेंट से हटा दिया जाएगा। ऐसा होने के बाद एफएंडओ के लिए

नए कॉन्ट्रैक्ट्स जारी नहीं किए जाएंगे। सेबी के एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया के हिसाब से अब स्टॉक कम 75 लाख रुपये होना चाहिए। अभी तक एमक्यूएसओएस की बाध्यता न्यूनतम 25 लाख रुपये की थी। इसी तरह सेबी ने स्टॉक्स के लिए मार्केट वाइड पोजिशन लिमिट कर दिया है। इसके अलावा स्टॉक्स की एवरेज डेली डिलीवरी वैल्यू को 10 करोड़ रुपये से बढ़कर 35 करोड़ रुपये कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि एवरेज डेली डिलीवरी वैल्यू में हुई जोरदार बढ़ोतरी की वजह से सेबी ने एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया में 10 करोड़ रुपये की लिमिट को बढ़ाकर 35 करोड़ रुपये कर दिया है।ब्रोकरेज फर्म आईआईएफएल ने सेबी के नए एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया को लेकर की गई अपनी स्टडी में कहा है कि इन नए नियमों की वजह से 23 स्टॉक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस सेगमेंट से बाहर हो सकते हैं। ऐसा नियमों के प्रभावी होने पर चंबल फर्टिलाइजर्स, जेके सीमेंट, रामक सीमेंट्स, गुजरात गैस, टॉरेंट फार्मा सन टीवी नेटवर्क, दीपक नाइट्राइट गुजरात नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स, डॉ लाल पैथ लैब्स, लॉरेंस लैब यूनाइटेड ब्रेवरीज, महानगर गैस लिमिटेड कोरोमंडल इंटरनेशनल, सिंजि इंटरनेशनल, कैन फिन होम्स जैसे कंपनियों के स्टॉक फ्यूचर्स एं ऑप्शंस सेगमेंट से बाहर हो सक है। दूसरी ओर अडाणी ग्रीन, डीमार्ट टाटा टेक्नोलॉजीज, जोमैटो औ जिओ फाइनेंशियल जैसे स्टॉक्स

आर्थिक सशक्तिकरण में पीएम विश्वकर्मा योजना बड़ी भूमिका निभायेगीः कलेक्टर

तीन दिवसीय विश्वकर्मा प्रदर्शनी सह व्यापार मेला शुरू

ग्वालियर । छोटे-छोटे हुनरमंद शिल्पकारों एवं विश्वकर्मा जनों के सपनों को साकार करने में पीएम विश्वकर्मा योजना सही मायने में परिदृश्य बदलने वाली योजना साबित होगी। आर्थिक रूप से सशक्त भारत को विश्व पटल पर लाने के लिये छोटे-छोटे स्तर पर हुनरमंद कारीगरों को मजबूती प्रदान करने में विश्वकर्मा योजना ब?ी भूमिका निभायेगी। इस आशय के विचार कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने यहाँ चेम्बर ऑफ कॉमर्स भवन परिसर में केन्द्र एवं राज्य सरकार के एमएसएमई विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे तीन दिवसीय ÷विश्वकर्मा प्रदर्शनी सह व्यापार मेला÷ के उदघाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने कहा कि छोटे-छोटे शिल्पकार और कारीगर जब अपने उत्पादों की बिक्री करने और प्रदर्शित करने के लिये अपने क्षेत्र से बाहर निकलते हैं, तो उनके उत्पादों को बाजार मिलता है बल्कि उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है। पीएम विश्वकर्मा योजना ने हुनरमंद शिल्पकारों को ब?ा सहारा दिया है। तीन दिवसीय ÷विश्वकर्मा प्रदर्शनी सह व्यापार मेला÷ में ग्वालियर सहित प्रदेश के विभिन्न

जिलों के 50 से अधिक शिल्पकार व विश्वकर्मा अपने हुनर व कौशल से बनाए उत्पाद लेकर आए हैं। प्रदर्शनी में मूर्तिकार, ब?ईकार, मालाकार, दर्जी, औजार निर्माता, सुनार, कुम्हार एवं अन्य हुनरमंद शिल्पकारों द्वारा अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। विश्वकर्मा सह व्यापार मेला आम जनता के लिए दोपहर 12 बजे से सायंकाल 6 बजे तक अवलोकन व खरीदी के लिये खुला रहेगा। मध्यप्रदेश चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज के अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल ने उदघाटन सत्र में कहा कि विश्वकर्मा श्रृष्टि से सबसे ब? वास्तुकार माने जाते हैं। खुशी की बात है कि भारत सरकार ने संवेदनशीलता का परिचय देकर समाज के छोटे-छोटे मगर हुनरमंद कारीगरों के लिये विश्वकर्मा जैसी कल्याणकारी योजना लागू की है। एमएसएमई विकास कार्यालय इंदौर के संयुक्त निदेशक राजीव एस ने कहा कि पीएम विश्वकर्मा योजना में छोटे-छोटे शिल्पकारों का पंजीयन, टूल किट प्रदान करना तथा प्रशिक्षण के बाद रियायती दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है। साथ ही उन्हें बाजार उपलब्ध कराने के प्रयास भी किए जाते हैं। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक एमएसएमई निलेश त्रिवेदी ने किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र ग्वालियर केएस सोलंकी ने जानकारी दी कि ग्वालियर जिले में पीएम विश्वकर्मा योजना के तहत एक लाख 34 हजार से अधिक विश्वकर्माओं का पंजीयन किया गया है।

मुख्यमंत्री के पिताजी के निधन पर एमपी वर्किंग जनर्लिस्ट यूनियन ने शोक जताया

ग्वालियर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के पूज्य पिताजी पूनमचंद यादव के दुखद निधन पर एमपी वर्किंग जनर्लिस्ट यूनियन ने गहरा शोक व्यक्त कर मृतात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की है। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में एमपी वर्किंग जनर्लिस्ट यूनियन के अध्यक्ष राधावल्लभ शारदा, कार्यकारी अध्यक्ष विनय कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ पत्रकार सुरेश शर्मा, ग्वालियर जिला अध्यक्ष अजय मिश्रा, कार्यकारी जिलाध्यक्ष धीरज बंसल, संजय त्रिपाठी, संजय तोमर, विवेक श्रीवास्तव, पूरन सिंह भदौरिया, फूलचंद मीणा, श्याम श्रीवास्तव, आनंद श्रीवास्तव, जितेन्द्र परिहार, अरूण शर्मा, हरीश दुबे, अनिल शर्मा, प्रदीप शास्त्री, रामकिशन कटारे, जितेन्द्र पाठक, सविता तिवारी, गीता पाण्डेय, जितेन्द्र पाण्डेय, छोटू जायसवाल, मुकेश बाथम, रविन्द्र सिंह, रवि उपाध्याय, प्रवीण शुक्ला, लोकेन्द्र भार्गव, पंकज बंसल, शैलेन्द्र शर्मा, रविकांत दुबे, अंकित सिंघल, गुलशन परूथी, पवन परूथी, अजय शर्मा, दीपक दिलेर, विनोद तिवारी आदि शामिल हैं।

हाकी जादूगर मेजर ध्यानचंद की हाकी खेलते प्रतिमा क्षतिग्रस्त की

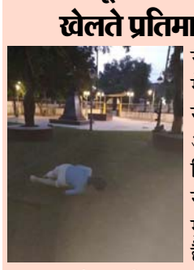

ग्वालियर। हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की हाकी खेलते हुये प्रतिमा को असमाजिक तत्वों ने तोड दिया है। यह प्रतिमा दो दिनों से मेजर ध्यानचंद पार्क में मुख्य प्रतिमा के पीछे पडी हुई है। इतना ही नहीं निगम का मुख्य कार्यालय सहित बाल भवन कार्यालय फायर ब्रिगेड कार्यालय पास ही है। और सभी अधिकारियों का वहीं से रोजाना निकलना होता है। लेकिन किसी भी अधिकारियों की नजर इस टूटी प्रतिमा पर नहीं पडी। इसे लेकर लोगों में काफी आक्रोश है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजर ध्यानचंद पार्क में मेजर ध्यानचंद की हाकी खेलते हुये एक प्रतिमा को अज्ञात असमाजिक तत्वों ने क्षतिग्रस्त कर पार्क में ही गिरा दिया। एक आरटीआई कार्यकर्ता राकेश कुशवाह की नजर इस प्रतिमा पर पडी तो उन्होंने उसका एक चित्र लिया। और उसे वायरल कर दिया। इसके बाद भी निगम के पार्क अधिकारी से लेकर किसी अन्य अधिकारी ने संज्ञान लेकर क्षतिग्रस्त हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की हाकी खेलते हुये प्रतिमा को नहीं हटाया।

सीएम डॉ. मोहन यादव के पिता का निधन, 100 साल की उम्र में ली अंतिम सांस

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के पिता पूनमचंद यादव का मंगलवार को निधन हो गया। वे करीब 100 वर्ष के थे और एक हफ्ते से बीमार चल रहे थे। जिसके चलते उन्हें उज्जैन के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सोमवार को ही उज्जैन आए केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके बेटे महा आर्यमन सिंधिया ने अस्पताल जाकर उनका हाल-चाल जाना था। रविवार को सीएम भी अपने पिता के पास पहुंचे थे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव छ्टरूहाउस से स्टेट हेंगर के लिए निकल गए हैं। कुछ देर में उज्जैन रवाना होंगे। मध्यप्रदेश बीजेपी के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने शोक जताया है। उन्होंने ङ्क पर लिखा, %बाबा महाकाल से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

लोकायुक्त एसपी राजेश मिश्रा ने पदभार सम्हाला

पदभार ग्रहण

ग्वालियर। ग्वालियर के नये लोकायुक्त एसपी राजेश मिश्रा ने मंगलवार को ग्वालियर लोकायुक्त कार्यालय में अपना पदभार ग्रहण कर लिया। वह सुबह कार्यालय पहुंचे तो लोकायुक्त पुलिस के विभागीय अधिकारियों ने उनकी अगवानी की।नवागत लोकायुक्त पुलिस अधीक्षक राजेश मिश्रा ने इस मौके पर पहुंचे पत्रकारों से अनौपचारिक चर्चा में कहा कि वह अभी विभागीय सहयोगी अधिकारियों से चर्चा कर प्रकरणों की समीक्षा करेंगे। उसका प्रयास होगा कि वह भ्रष्टाचार के मामलों में पारदर्शी कार्रवाई करें। राजेश मिश्रा ने कहा कि लोकायुक्त में पहले से पेंडिंग मामलों में अब न्यायालय में शीघ्रताशीघ्र चार्जशीट पेश की जायेगी, ताकि भ्रष्टाचार के मामलों में शीघ्र कार्रवाई हो सकें और आरोपियों को सबक मिल सकें।

निरीक्षण पर निकले निगमायुक्त ने महादेव मंदिर पर की पूजा

ग्वालियर। मंगलवार को निरीक्षण पर निकले निगमायुक्त अमन वैष्णव ने वार्ड क्रमांक 61 और 62 का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान निगमायुक्त वैष्णव ने पार्षद निधि से वार्ड में बने मुक्तिधामों में समुचित व्यवस्था करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। साथ ही क्षेत्रीय कार्यालय पर पहुंचकर संपत्ति कर वसूली की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान वार्ड 61 के पार्षद एमआईसी सदस्य नाथूराम ठेकेदार, अपर आयुक्त विजय राज, उपायुक्त अमरसत्य गुप्ता सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। निगमायुक्त अमन वैष्णव ने वार्ड क्रमांक 61 एवं 62 के क्षेत्रीय कार्यालय पर पहुंच कर पत्ति कर संग्रहकों से प्रतिदिन वसूली का डाटा लिया और उसकी समीक्षा की। निगमायुक्त श्री वैष्णव ने संपत्तिकर संग्रहकों को निर्देश दिए की प्रतिदिन अधिक से अधिक संपत्तिकर की वसूली की जाए। निरीक्षण के दौरान कुछ स्थानों पर निगमायुक्त को स?क खराब मिली उसे ठीक करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान निगमायुक्त को एमआईसी सदस्य ने बताया कि वार्ड में मुक्तिधामों में पर्याप्त सुविधा न होने के कारण आमजनों को अंतिम संस्कार की क्रिया में परेशानी का सामना करना प?ता है। निगमायुक्त ने पार्षदनिधि से वार्ड के सभी मुक्तिधामों में समुचित व्यवस्थाएं करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान निगमायुक्त गिरगांव स्थित महादेव मंदिर में पूजा अर्चना भी की।

निगमायुक्त ने जनसुनवाई में सुनी आमजन की समस्यायें

ग्वालियर। जनसुनवाई में आने वाली समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनकर उनका निराकरण संतुष्टि के साथ करें। जनसुनवाई में आने वाले आमजन की समस्यायें सुनकर उनका निराकरण नहीं करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। यह निर्देश निगम आयुक्त अमन वैष्णव ने जनसुनवाई के दौरान सभी अधिकारियों को दिये। मंगलवार को जनसुनवाई में पहुंचे वार्ड 34 पारदी मोहल्ला शिंदे की छावनी के निवासी गणों ने निगमायुक्त को आवेदन देते हुए बताया कि शासकीय नाले के टूट जाने के बाद उस पर कॉलोनीवासियों ने अवैध कब्जा कर लिया है, जिस कारण कचरा वाहन या अन्य कोई वाहन अंदर नहीं जा पा रहा है। वहीं वार्ड 52 गुडा टॉवर के पास रहने वाली देवी सिंह कुशवाह ने आम रास्ते पर अतिक्रमण करके मकान का छज्जा बाहर निकाल लिया है जिस कारण आमजन को आवागमन में काफी परेशानियां हो रही हैं। आवेदकों की समस्यायें सुनकर निगमायुक्त ने सुनवाई करते हुए कुछ समस्याओं का निराकरण त्वरित करते हुए, बाकि समस्याओं के निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। इसके साथ ही जनसुनवाई में पेयजल, अतिक्रमण, सफाई, विद्युत, आवास, सीवर सफाई आदि से संबंधित 37 आवेदन प्राप्त हुए, जिनके निराकरण के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही के निर्देश निगमायुक्त ने दिए।सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का निराकरण नहीं किया तो होगी कार्रवाईः निगमायुक्त सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का निराकरण समय सीमा में करें और यदि किसी अधिकारी की लापरवाही से समस्या लंबित पाई गई तो संबंधित अधिकारी के खिलाफ कडी कार्यवाही की जाएगी। यह बात निगम आयुक्त अमन वैष्णव ने सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा करते हुए सभी अधिकारियों को कहीं। मंगलवार को समीक्षा बैठक के दौरान निगमायुक्त श्री वैष्णव ने निर्देश दिए कि फोर्स क्लोज की जाने वाली शिकायतों में अपर आयुक्त विजय राज एवं मुनीश सिकरवार आधी-आधी शिकायतों का निराकरण करेंगे। इसके साथ ही भवन अनुज्ञा एवं यांत्रिकी प्रकोष्ठ की शिकायतों का निराकरण सिटी प्लानर के स्तर पर किया जाएगा।

प्रेस्टीज प्रबंधन में वेब टेक्नोलाजी पर तीन दिवसीय वर्कशाप आयोजित

ग्वालियर। प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान में तीन दिवसीय वेब टेक्नोलाजी विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला संस्थान के प्रांगण में ही 27 से 29 अगस्त तक चली। कार्यशाला का मुख्य उददेश्य संस्थान के छात्र एवं छात्राओं को एचटीएमएल , जावा स्क्रिप्ट तथा पीएचपी पर हेंडस ओन प्रेक्टिस सिखाना था तथा सभी छात्र एवं छात्राओं को वेब टेक्नोलाजी के इस्तेमाल में निपुण बनाना था। संस्थान के निदेशक डा निशांत जोशी ने बताया कि वेब टेक्नोलाजी का चलन आज के समय में बढ गया है। और वेब टेक्नोलाजी के क्षेत्र में व्यवसायिक जीवन को सुधारने की सुनहरी संभावनाएं है और उन्होंने बताया कि सभी छात्र एवं छात्राएं वेब टेक्नोलाजी के माध्यम से मार्क अप भाषाएं और मल्टी मीडिया एप को सीख सकते है। संस्थान की सह निदेशिका डा तारिका सिंह सिकरवार ने बताया कि छात्र छात्राएं वेब टेक्नोलाजी में उपयोग होने वाले सभी उपकरणों का इस्तेमाल करके अपने आप को टेक्नोलाजी के क्षेत्र में परिपक्व बना सकते है। और उन्होंने यह भी बताया कि हमारे संस्थान में विभिन्न प्रकार की कम्प्यूटर लैब का प्रबंध किया गया है, जिसका संस्थान के सभी छात्र एवं छात्राएं फायदा उठा सकते है। इस तीन दिवसीय कार्यशाला के रिसोर्स पर्सन डायरेक्टर पीएन इन्फोसिस विकास जैन ने बताया कि सभी छात्र एवं छात्राएं एचटीएमएल, सीएसएस तथा जावा स्क्रिप्ट का उपयोग करके अपने आप को टेक्नोलाजी के क्षेत्र में दक्ष बना सकते है। तथा वेब टेक्नोलाजी के माध्यम से ग्राफिक्स और चित्रण वेब डिजायन टाइपोग्राफी डिजायन, ले आउट डिजायन तथा वेब एनीमेशन सीख सकते है। उन्होंने बताया कि वेब टेक्नोलाजी के माध्यम से आप सामाजिक नेट वर्किंग को बढावा दे सकते है और लोगों से आन लाइन संवाद कर सकते है।

35 देशों के मंत्रिगण ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर भ्रमण पर आयेंगे

कलेक्टर एवं एसपी ने भारत सरकार के अधिकारियों के साथ तैयारियों को लेकर बैठक की

ग्वालियर। नईदिल्ली में आयोजित होने जा रही विश्व दूरसंचार मानकीकरण असेम्बली (डब्ल्यूटीएसए) में भाग लेने आ रहे विभिन्न देशों के दूरसंचार मंत्रियों सहित 35 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर के भ्रमण पर भी आयेगा। इस दौरान विभिन्न राष्ट्रों के मंत्रिगण यूनेस्को द्वारा घोषित म्यूजिक सिटी ऐतिहासिक ग्वालियर दुर्ग पर लाइट एण्ड साउण्ड शो देखने पहुँचेंगे। साथ ही ऊषा किरण पैलेस में दूरसंचार के क्षेत्र में मेड इन इंडिया की थीम पर प्रजेंटेशन भी देखेंगे। विभिन्न देशों के मंत्रिगणों का यह प्रतिनिधि मंडल ग्वालियर प्रवास के दौरान केन्द्रीय दूरसंचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मेजबानी में जयविलास पैलेस में आयोजित डिनर में भी शामिल होगा। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने मंगलवार को विभिन्न देशों के मंत्रियों के प्रतिनिधि मंडल के ग्वालियर प्रवास की व्यवस्थाओं को लेकर वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक ली। बैठक में कलेक्टर श्रीमती चौहान ने नगर निगम सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभिन्न राष्ट्रों से आ रहे मंत्रिगणों के प्रतिनिधि मंडल के प्रवास के दौरान साफ-सफाई, स?क मार्ग व बिजली सहित सभी व्यवस्थायें सुदृ? रहें। साथ ही शहर की यातायात व्यवस्था भी सुव्यवस्थित बनी रहे, इसके लिए पुख्ता कार्ययोजना बनाकर उस पर अमल करें। प्रभारी पुलिस अधीक्षक श्री सगर ने कहा कि विदेशी मंत्रियों के प्रतिनिधि मंडल के आगमन के दौरान ग्वालियर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जायेंगे। भारत सरकार के कम्युनिकेशन डिपार्टमेंट के निदेशक अतीक अहमद ने जानकारी दी कि इंटरनेशनल टेली कम्युनिकेशन यूनियन द्वारा हर चार साल के अंतराल से अलग-अलग देशों में विश्व दूरसंचार मानकीकरण असेम्बली का आयोजन किया जाता है। इसी असेम्बली में भाग लेने आ रहे विभिन्न देशों के 35 मंत्रिगण एवं अन्य ऑफिसियल ऐतिहासिक नगरी ग्वालियर का भ्रमण करने आयेंगे। यह प्रतिनिधि मंडल विशेष चार्टर्ड विमान से 13 अक्टूबर को दोपहर लगभग 12 बजे ग्वालियर पहुँचेगा। ग्वालियर प्रवास के दौरान होटल ताज ऊषा किरण में दो प्रजेंटेशन देखेगा। साथ ही ग्वालियर दुर्ग पर लाइट एण्ड साउण्ड प्रोग्राम देखने भी जायेगा। सायंकाल जयविलास पैलेस में डिनर में शामिल होने के बाद रात्रि लगभग 9 बजे चार्टर्ड विमान द्वारा वापस नईदिल्ली के लिये रवाना होगा। अतीक अहमद ने बताया कि दूरसंचार मानकीकरण क्षेत्र की रणनीतिक दिशा को परिष्कृत करने के उद्देश्य से इंटरनेशनल टेली कम्युनिकेशन यूनियन द्वारा विश्व दूरसंचार मानकीकरण असेम्बली का आयोजन किया जाता है। नईदिल्ली में आयोजित होने जा रही असेम्बली में 193 सदस्य देशों, वैश्विक मानकीकरण निकायों और दुनियाभर के दूरसंचार / आईसीटी उद्योग के लगभग 2 हजार प्रतिनिधियों के भाग लेने की संभावना है। बैठक में भारत सरकार के कम्युनिकेशन मंत्रालय के निदेशक अतीक अहमद, प्रभारी पुलिस अधीक्षक राकेश सगर, अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार व टी एन सिंह, अपर आयुक्त नगर निगम मुनीष सिकरवार तथा भारत सरकार के दूरसंचार मंत्रालय के अन्य अधिकारी एवं आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अधिकारियों सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478